सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो0 बॉ0 नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफ़सेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मार्च, 2013 वर्ष 12 अंक 01

बन्दा है तू ख़ुदा का

मग़रूर क्यों है इतना
नादान होश में आ
कर ले यक़ीन दिल से
तू ख़ाकका है पुत्ला
ये हाथ पांव तेरे
तिन्के का हैं सहारा
देता है रिज़्क़ तुझ को
परवरदिगार तेरा
कर बन्दगी ख़ुदा की
बन्दा है तू ख़ुदा का

अज्ञात कवि

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
जिन्न व इन्स की पैदाइश	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	7
हिजरत का बुनियादी मजमून	मौलाना सईदुर्रहमान आजमी	9
इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर	रजमुस्साकिब नदवी	12
दारुल उलूम नदवतुल उलमा के	मुफ़्ती ज़हूर अहमद नदवी	14
तीन कुव्वतों की ज़रूरत	मौलाना सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी	17
सभ्य समाज के लिए	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	22
सच्चा रही बारहवें वर्ष में	इदारा	26
ईमान क्या है	जुबैर अहमद नदवी	27
गठिया का उपचार	डॉ0 अनुराग श्रीवास्तव	29
अपनी बुद्धि का सदुपयोग कीजिए	अबरार अहमद	31
आतंकवाद की समस्या एवं समाधान	इक़बाल अहमद	34
एक डॉक्टर का ककुबूले इस्लाम	जावेद नदवी	37
एलाने मिलकियत		38
एक उर्दू पद्य	ज़फर अली	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़र:

अनुवाद :-

ये सब लोग एक दीन (धर्म) पर, फिर भेजे अल्लाह ने पैगम्बर (सन्देष्टा) खुशख़बरी सुनाने और डराने और उतारी उनके साथ किताब सच्ची कि फैसला करे लोगों में जिस बात में वह झगड़ा करें और नहीं झगड़ा डाला किताब में मगर उन्हीं लोगों ने जिन्हें किताब मिली थी, उसके बाद उनको पहुंच चुके स्पष्ट आदेश आपस की ज़िद से, फिर अब हिदायत (मार्गदर्शन) की अल्लाह ने ईमान वालों को उस सच्ची बात की जिसमें वह झगड़ रहे अपने हुक्म से, और *अल्लाह* बतलाता है जिसको चाहे सीधा रास्ता[1(213)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के समय से एक ही सच्चादीन रहा एक मुद्दत तक, उसके बाद दीन में लोगों ने मतभेद पैदा किया तो अल्लाह ने नबियों को भेजा जो ईमान वालों को सवाब की ख़ुशख़बरी देते थे और काफिरों को अज़ाब से ड़राते थे और उनके साथ सच्ची किताब भी भेजी ताकि लोगों का विवाद और मतभेद दूर हो और सच्चा धर्म (इस्लाम) उनके मतभेदों से सुरक्षित और कायम रहे और ईश्वरीय आदेश (अहकामे इलाही) में उन्हीं लोगों ने मतभेद और विवाद पैदा किया जिनको वह किताब मिली थी, जैसे यहूदी व ईसाई तौरेत व इंजील में मतभेद और परिवर्तन करते थे ये विवाद ना समझी में नहीं बल्कि खूब सोच–समझ कर केवल सांसारिक प्रेम और जिद व हसद से ऐसा करते थे, तो अल्लाह ने अपने फज़्ल (कृपा) से ईमान वालों को सत्यमार्ग पर चलने को हर अक़ीदे और अमल में सच व हक़ की शिक्षा दी और यहूदी के मतभेदों और बढ़ाव–चढ़ाव से उनको सुरक्षित रखा।

फायदा :- इस आयत से दो बातें मालूम हुई, एक तो ये कि अल्लाह ने जो किताबें और नबी अनगिनत भेजे तो इसलिए नहीं कि हर फिरके (वर्ग) को अलग तरीक़ा बतलाया हो बल्कि सबके लिए अल्लाह ने असल में एक ही रास्ता निर्धारित किया, जिस समय उस रास्ते से फिसले तो अल्लाह ने नबी को भेजा और किताब उतारी कि उसके अनुसार चलें, उसके बाद फिर बहके तो दूसरा नबी और किताब अल्लाह ने उसी एक रास्ते को कायम करने के लिए भेजा, उसकी मिसाल ऐसी है जैसे कि तन्दरुस्ती एक है और बीमारियाँ बेशुमार। जब एक रोग पैदा हुआ तो उसके मुताबिक दवा और परहेज़ बताया, जब दूसरा मर्ज़ पैदा हुआ तो दूसरी दवा और परहेज़ बताया, अब अन्त में

शेष पृष्ठ................ 21 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मस्जिद में जाने का सवाब

—अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह की मेहमानी-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो सुबह या शाम को मस्जिद में नमाज़ बाजमाअत अदा करेगा तो अल्लाह उसकी जन्नत में मेहमानी करेगा।

(बुखारी—मुस्लिम)

कदमों का सवाब —

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो आदमी अपने घर से गुस्ल या वुजू करके पाक होकर मस्जिद में फर्ज़ नमाज़ के लिए आए तो उसका एक—एक कदम ख़ता को मिटाएगा और हर कदम एक दरजा बुलन्द करेगा। (मुस्लिम)

हज़रत उबइ बिन काब रज़ि0 कहते हैं कि एक अंसारी का घर मस्जिद से इतना दूर था कि उससे ज़्यादा किसी का न था और उनकी कोई नमाज़े जमाअत छूटती न थी तो उनसे लोगों ने कहा कि एक गधा खरीद लो, उस पर सवार होकर रात के अन्धेरे और दिन की तपिश में आया—जाया करो, कहा ये मुझे पसन्द नहीं कि मस्जिद के पहलू में मेरा घर हो, मैं तो ये चाहता हूं कि मेरे क़दम के निशान घर से मस्जिद तक और मस्जिद से घर तक लिखे जाएं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए सभी का सभी जमा कर दिया है।

(मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 कहते हैं कि मस्जिदे नबवी के आसपास कुछ घर खाली हुए तो बनू सल्मा ने इरादा किया कि मस्जिद के पास आ जाएं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसकी खबर हुई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे कहा कि मस्जिद के क़रीब रहने का इरादा कर रहे हो? कहा ऐ अल्लाह के रसूल! बेशक आपने सही सुना, फरमाया हमारा इरादा तो ऐसा हुआ था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अपने घर में ही रहो, तुम्हारे कदम घर से मस्जिद तक आने के लिखे जाएंगे। उन्होंने कहा, अब हमको घर बदलना पसन्द नहीं। (मुस्लिम)

हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जितनी दूर से कोई नमाज़ पढ़ने आएगा उतना ही ज़्यादा सवाब पाएगा और जो आदमी नमाज़ का इन्तेज़ार करे और फिर बाजमाअत इमाम के साथ अदा करे तो उसको उस आदमी से ज़्यादा सवाब मिलेगा जिसने नमाज़ पढ़ी और सो गया।

(बुखारी—मुस्लिम)

❖❖❖

जिन्न व इन्स की पैदाइश सिर्फ इबादते इलाही के लिए है

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

अल्लाह तआ़ला ने फरमाया– अनुवादः "मैंने जिन्नों और इन्सानों को लिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया है" (कुर्आन 51:56)

इबादत का मफहूम यहां इताअ़त है जिसे बन्दगी (दास्ता) भी कह सकते हैं, नमाज़, रोज़ा, जक़ात और हज इसलिए इबादत हैं कि अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए हुक्म दिया कि नमाज़ काइम करो, जकात अदा करो रमज़ान के रोज़े रखो और इस्तिताअ़त पर हज अदा करो, इसमें यह न समझना चाहिए कि बस यह नमाज़ रोज़ा ही इबादत हैं बल्कि ज़िन्दगी का हर वह काम जो अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ किया जाए वह इबादत है और अल्लाह का हुक्म हम को सिर्फ उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही के जरिए मिल सकता है इसलिए जो काम भी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत से किया जाए वह इबादत है।

अल्लाह के रसूल ने अपनी उम्मत को जिन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा सिखाया, यह तरीक़ा आपने अपनी जानिब से नहीं सिखाया बल्कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक बताया, आप उम्मत को अपनी तरफ से नहीं सिखाते थे। (और वह अपनी ख्वाहिशे नफ्स से बात नहीं कहते हैं वह तो वही होती है जो उनको की जाती है (3:3,4) कुर्आन में आया है "जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअ़त की (कुर्आन 4:8) पस आयत में जो कहा गया कि मैंने जिन्न व इन्स को सिर्फ अपनी इबादत के लिए पैदा किया" उसका मफहूम यह हुआ कि मैंने जिन्न व इन्स को अपने रसूल की इताअत के ज़रिए अपनी इताअत व इबादत के लिए पैदा किया लिहाजा हमारे लिए ज़रूरी हुआ कि हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअ़त में और आपके तरीक़े पर ज़िन्दगी गुज़ारें। जाहिर है कि हमने अल्लाह के रसूल का जमाना नहीं पाया, मगर अल्लाह तआ़ला चूंकि इस दीन की हिफाज़त खुद फ़रमा रहा है इसलिए उसने अपने खास बन्दों के ज़रिए अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सभी ज़रूरी बातें और अपना कलाम किताबी शक्ल में महफूज़ करवा दिया, बल्कि कुर्आन व हदीस को सहाबा रज़ि0 ने जिस तरह समझा और जिस तरह उस पर अमल किया वह सब भी महफूज़ है। कुर्आन मजीद और अहादीसे शरीफ़ की हिफ़ाज़त के साथ उस की तश्रीह व तफ़हीम और जिन्दगी में नये आने वाले मसाइल का हल

भी किताब व सुन्नत की रौशनी में दीन के इमामों हज़रात अबू हनीफा, मालिक, शाफई व अहमद बिन हंबल रह0 के जरिए मुदव्वन (संगृहीत) करवा दिया, इन इमामों में से किसी इमाम की तक़लीद उनकी तक़लीद नहीं है बल्कि उनके समझे हुए किताब व सुन्नत के मफहूम की तक्लीद है यानी उन की तफहीम व तशरीह के ज़रिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तक्लीद है।

जो साहिबे इल्म किसी इमाम की तक्लीद नहीं करता बल्कि बराह रास्त कुर्आन व सुन्नत को समझ कर उस पर अमल करता है वह भी हक पर है और अहले सुन्नत व जमाअत से है, और ऐसे आलिम की जो पैरवी करता है वह भी हक पर है, लेकिन चारों इमामों के जिन मसाइल को वह किसी हदीस के मुताबिक़ न पाकर वह उस इमाम के मुकल्दि आलिम से समझे बिना उस को किताब व सुन्नत के खिलाफ कह देता है वह बेशक गलती पर है, कुछ लोग तो आगे बढ़ कर तक्लीद को शिर्क ही कह देते हैं ऐसे लोग सख़्त गलती पर हैं। इसलिए कि हर शख़्स इतनी अरबी पढ़ ले कि वह किताब व सुन्नत से बराह रास्त अहकाम निकाल सके यह ना मुमकिन है, जो शख़्स अरबी जबान नहीं जानता वह जरूर जानने वाले की बात पर भरोसा करेगा। इसी का नाम तक्लीद है।

बाज़ लोग बाज़ ऐसे फिक्ही जुज़यात को कम पढ़े या बे पढ़े के सामने बयान करते हैं जिनकी दलील सतही नज़र में किताब व सुन्नत में नहीं मिल पाती बल्कि बहुत गौर व फिक्र बल्कि किसी मुहक्किक़ के समझाने से समझ में आती है, वह अवाम से यह कहने लगते हैं कि यह जुज़या फलां इमाम ने अपनी तरफ से गढ़ लिया है, यह शरीअत में दख़्ल अन्दाजी है, इस तरह की बातें लोगों में दीन से दूरी पैदा करती हैं।

एक साहब से मैंने सुना वह कह रहे थे कि हिदाया का एक–एक लफ्ज़ किताब व सुन्नत के खिलाफ है, अस्तग़फिरुल्लाह। इसतरह के जुम्ले लोगों को दीन से जोड़ेंगे नहीं दीन से दूर करेंगे, बात अगर सही होती तो कहने में कोई हरज़ न था, जिस तरह एक नव मुस्लिम आपने बाप दादा को गुमराह समझने पर मजबूर होता है, एक मुकल्दि भी अपने बाप दादा को गुमराह समझ लेता लेकिन बात बिल्कुल गलत है, मैंने भारत के किसी दीनी मदरसे में एक दिन भी नहीं पढ़ा है मेरी तअ़लीम इण्डिया की पी.एच.डी. तक है और कॉलेज और युनिवर्सिटी की है मैंने अरबी सऊदिया में पढ़ी और दीन भी वहीं पढ़ा हंबली फिक्ह पढ़ी चारों मज़ाहिब का मुक़ारना (तुलनात्मक अध्ययन) तफसीर व हदीस में एम.ए. किया। सारी दोस्ती व तअल्लुक़ वहाबी तहरीक से मुतअस्सिर सऊदियों से रही किसी से यह कहते न सुना कि हिदाया का एक एक लफ्ज़ कुर्आन व हदीस के खिलाफ है बल्कि

शेष पृष्ठ..... 13 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मुख़ालिफ़ीन (विरोधियों) का मदीने पर आक्रमण और खनदक़ का वाकिआ़ सन् 5 हिजरी-

जब विभिन्न तरीक़ों और साज़िशों के बाद भी मुसलमानों की ताकत और मज़बूती को तोड़ा न जा सका तो मदीने के यहूदी और मुनाफिकीन, कुरैश और उनके हम ख़्याल क़बायल, उन सबने मिल कर एक ज़्यादा ज़ोरदार इस्कीम बनाई कि एक बड़ी और संयुक्त फौज तैयार करके मुसलमान इलाके पर हमला करके मुसलमानों की ताकत तोड़ दी जाये, उसमें मदीने के यहूदी और उनके वह साथी जो वहाँ रह गये थे जिनमें ख़ास तौर पर बनू कुरैज़ा आगे थे, उन्होंने कुरैश को यह *यकीन* दिलाया कि वह पूरी मदद करेंगे और दोनों मिल कर मुसलमानों को मदीने से निकाल देंगे, यह उनकी ताकत को पूरी तरह ख़त्म कर देंगे, इन कोशिशों के नतीजे में उनके दरमियान एक फौजी समझौता क़ायम हो गया, जिसके अहम सहयेगियों में मक्का के कुरैश, इलाके नज्द के कबीले ग़तफान और उनके साथ दरपर्दा तौर पर मदीने के यहूदी और मुनाफिकीन और दूसरे कबीलों के बाज़ जत्थे शामिल थे, चूनांचे ज़ीक़अदः सन् 5 हिजरी में चार हज़ार आदमियों के साथ मदीने का रुख किया था, गतफान ने छः हज़ार आदमी इसमें शामिल किये, चूनांचे यह सारी तादाद दस हज़ार जंगजूओं की बाहर से चल कर मदीना तय्यबा पहुच गयी, उनसे बनू कुरैज़ा का वादा था कि वह अन्दर से जो मदद होगी करेंगे, अबू सुफियान बिन हरब कुफ़्फार के इस लश्कर का सेनापति था[1]।

यहां हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सिर्फ तीन हज़ार या इस से कमोबेश लोग थे सूरते हाल बहुत खतरे की थी, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मशविरा किया तो हज़रत सलमान फारसी रज़ि0 ने यह राय दी कि तीन तरफ से पहाड़ी रुकावटें हैं, एक तरह से मदीने में दाखिल होने का रास्ता है, अगर वहां खनदक खोद दी जाये तो मुसलमान किला बन्द होकर मुकाबला कर सकते हैं[2], इस पर अमल किया गया, मुसलमानों ने खनदक की सख्त निगरानी करके अपनी हिफाज़त का इन्तिज़ाम किया, सख्त सर्दी का ज़माना, खाने पीने की कमी, खनदक खोदने की मशक्कत और उसके किनारे हर वक्त मौजूद रहने को तीन हफ़्ते से ज़्यादा बर्दाश्त करना पड़ा, और दिन व रात ख़नदक के सामने मुकाबले के लिए तैयार रहना पड़ा, यह उनके लिए सख़्त इम्तिहान था, लम्बी मुद्दत और तीन हफ़्तों तक दुश्मन के शहर के अन्दर घुस आने का खतरा, खाने की शदीद कमी,

1. ज़ादुल मआ़द 3/270
2. अलबिदाय वन—निहाया 4/95, सीरत इब्ने हिशाम 2/244।

यह ऐसी सूरतेहाल कि बड़े से बड़े हिम्मत वालों की हिम्मत टूट जाये, इसमें असहाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईमान व यक़ीन बिल ग़ैब का इम्तिहान था, कि आप जबकि सच्चे नबी हैं, अल्लाह तआ़ला की तअ़ईद आपके साथ है तो फिर ऐसी परेशानी और दुश्मन की सर्कशी क्यों और ऐसी तवील मुद्दत तक क्यों जारी है? लेकिन सारे मुसलमान अपने ईमान बिल ग़ैब और अल्लाह पर पूरे यकीन और भरोसे के साथ क़ायम रहे। शायद अल्लह तआला को मुसलमानों के ईमान की पुख़्तगी का इम्तिहान लेना था। इसलिए सख़्त ज़ैहनी और जिस्मानी दोनों सतह पर सख्त हालात से गुज़ारा गया और मुसलमान इस इम्तिहान में कामयाब रहे और फिर अल्लाह तआ़ला ने ग़ैब से मदद की। अल्लाह तआ़ला की इस तरह मदद आयी कि सख़्त आँधी और तूफान आया और दुश्मनों के ख़ेमे उखड़ गये और अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह व ग़लबा फरमाया और बग़ैर जंग के फतह हासिल हो गई। दुश्मन मायूस और बदहवास हो कर चले गये[1]। कुर्आन मजीद में इस आज़माईश का तज़किरा इस तरह किया गया है:– "जब वह तुम्हारे ऊपर और नीचे की तरफ से तुम पर चढ़ आए और जब आंखें फिर गईं और दिल मारे दहशत के गलों तक पहुंच गए और तुम ख़ुदा की निसबत तरह–तरह के गुमान करने लगे वहां मोमिन आज़माए गये और सख़्त तौर पर हिलाए गये"। (सूरः अहज़ाब 10–11)

"मोमिनो! खुदा की उस मेहरबानी को याद करो जो उसने तुम पर उस वक्त की जब फौजें तुम पर हमला करने को आईं तो हम ने उन पर हवा भेजी, और ऐसे लश्कर नाज़िल किये जिनको तुम देख नहीं सकते थे और जो काम तुम करते हो खुदा उनको देख रहा है"। (सूरः अहजाब–9)

और जो काफिर थे उनको खुदा ने फेर दिया, वह अपने गुस्से में भरे हुए थे, कुछ भलाई हासिल न कर सके और खुदा मोमिनों को लड़ाई के बारे में काफी हुआ हौर खुदा ताक़तवर और ज़बरदस्त है। (सूरः अहज़ाब–25)

यह आंधी तूफान के ज़रिये मुसलमानों की मदद शुरु में ही हो सकती थी, लेकिन शायद ईमान वालों के ईमान की आज़माईश लेना थी कि रज़ा–ए–इलाही के लिए तीन हफ़्ते सख़्त खतरे और मेहनत में रखा गया, इस पूरी मुद्दत मे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिम्मेदार और क़ायद (नायक) की हैसियत से सूरते हाल पर पूरी नज़र रखे हुए थे और हालात सख़्त से सख़्त होने लगे और सहाबा सख़्त इम्तिहान से गुज़रने लगे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रात अन्सार से मशविरा किया कि कहो तो इस आफत को ख़त्म करने के लिए खजूर के बागात की आमदनी का कुछ हिस्सा सालाना देने की पेशकश की जाये कि यह बला टले, इस पर उन्होंने अर्ज़ किया कि हम

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/232

शेष पृष्ठ.....21 पर

हिजरत का बुनियादी मज़मून

—हिन्दी लिपिः मंज़र सुबहानी

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

सन् हिजरी का आगाज़ हिजरत के इस अज़ीमुश्शान तारीख़ी वाकिए की याद ताज़ा करता है, जो 13 साल की मुसलसल जिद्दोजेहद के बाद, मुसलसल अज़ीयतों मशक्कतों और हिम्मत शिकन हालात का मुक़ाबला करने के बाद पेश आया, और नबीय करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रफ़ीक़ सिद्दीक़े अकबर रज़ि0 को साथ लेकर मक्के से मदीने जाने के लिए तैयार हुए, अहले मक्का की अदावत आख़िरी हद तक पहुंच चुकी थी और वह किसी तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वजूद को बर्दाश्त करने के लिए तैयार न थे। इस लिए आप उनके शर से बचने के लिए पहले ग़ारे सौर में चन्द दिन क़याम फरमाया, और इस असना में ज़ादे सफर, सवारी और रहबर का इन्तेज़ाम भी फरमा लिया, और एक दिन सुबह को काफिला हिजरत करके मदीने की तरफ़ चल पड़ा और तारीख़े इस्लाम के इस ठहरे हुए समन्दर में तुग़यानी शुरु हो गई।

माक़ब्ल हिजरत के यह 13 साल उस बुनियादी पत्थर की हैसियत रखते हैं जिसके मुस्तहकम होने के लिए हज़ारों तूफान, सैलाबों और तरह–तरह की गर्दिशों की ज़रूरत पड़ती है। बुनियाद का पत्थर मज़बूत करने के लिए वक़्त और मेहनत, कुर्बानी और तहम्मुल सब कुछ दरकार होता है, इसलिए जिस बुनियाद पर मसाईब का बोझ डाले बग़ैर इमारत तअमीर कर दी जाती है, वह अमूमन मामूली तूफ़ान और झटकों को बर्दाश्त नहीं रखती और किसी अदना मुनासबत से गिर कर मुनहदिम हो जाती है, या कम अज़कम ना क़ाबिल रेहाईश क़रार दे दी जाती है। हिजरत से पहले की मुद्दत दर अस्ल इस्लामी तारीख़ का वह बुनियादी पत्थर है जिसके हज़ारों तूफ़ान और ज़लज़लों और तरह तरह के झटकों को बर्दाश्त करके अपना इस्तेहकाम साबित कर लिया था और इस पर एक शान्दार तारीख़ की बुलन्द व बाला इमारत बेख़ौफ़ व ख़तर क़ायम हो सकती थी।

माक़ब्ल हिजरत की सख़्तियों और इन सब्र आज़मा मसाईब के अन्दर जिनको पैगम्बरे इस्लाम और इनके जांनिसार साथियों ने नेहायत ख़न्दह पेशानी के साथ झेला था, एक ऐसी लाज़वाल ज़िन्दगी और एक ऐसी शान्दार फ़तह व नुस्रत मुज़मर थी जिसको दुनिया ने इस्लामी शरीअत के नाम से पहचाना और जिसने देखते ही देखते मश्रिको मगरिब शुमाल व जुनूब में अपना झण्डा गाड़ दिया, और बेचैन व मुज़तरिब दुनिया गुमकरदह राह क़ौमों को सुकून व हिदायत की दौलत दवाम अता की, इन्सानियत की दौलत तने मुर्दह में रूह फूंकी और इन्सानों को एक ऐसा क़ानूने

फितरत अता किया जो उनके तमाम मसाईल का हल था और जिसने उनकी सआदत व कामरानी का राज़ मुज़मर था।

हिजरत का वाकिया इस अज़ीम तरीन कामियाबी का एलान था जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने अज़ीम तरीन मक़सद में बेशुमार ख़तरात व परेशानियों को झेलने के बाद हासिल हुई थी, यह वाकई ऐलान था इस बात का भी कि इस्लाम ग़ालिब है और मुसलमान मुज़फ़्फ़र व मनसूर हैं। यह हक़ व बातिल की जंग में बातिल की शिकस्त और हक़ की कामियाबी का एलान था, यह कुफ्र की पसपाई और तौहीद व रिसालत का एलान था। यह आवाज़ हक़ की सदाक़त और शैतानी तदाबीर की नाकामी का एलान था। यह इन्सानों की सआदत व फ़लाह और जादए इन्सानियत से दूर भागने वालों की शक़ावत व बदबख़्ती का एलान था, हिजरत का वाकिया राहे खुदा में सब कुछ कुर्बान कर देने और खुदा ही के लिए जीने और मरने का एलान था। यह इस बात का एलान था कि इन्सान को ख़ुदा की राह में सब कुछ छोड़ देने और सब कुछ नज़र अन्दाज़ कर देने के बाद सब कुछ मिल सकता है। और इससे ज़्यादा मिल सकता है जो छोड़ा या नज़र अन्दाज़ किया है।

हिजरत का वाकिया एक मुसलमान के लिए बड़ी इबरत व बसीरत का हामिल है यह कामियाबी का एक नया मोड़ है, यह पूरी इन्सानियत के लिए क़यामत तक के लिए अमन व सुकून और ऐशो दावाम का पैग़ाम है।

हिजरत एख़लास व मुहब्बत, कुर्बानी, इताअत का वह मेयार है जिसके बग़ैर ज़िन्दगी में कामियाबी की उम्मीद करना, सआदत व सुकून की तवक्को रखना बेकार है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के से मदीने की तरफ हिजरत फ़रमाई थी, लेकिन अब मुसलमानों की हिजरत यह है कि वह गुनाह व मआसियत की ज़िन्दगी से ताअ़त व बन्दगी की तरफ हिजरत करें, वह नफ़्स और शैतान की पैरवी छोड़ कर ख़ुदा व रसूल की पैरवी करें, वह बुराइयों और बद अख़्लाकियों की दुनिया से हिजरत करके नेकियों और बुलन्द अख़्लाकी की दुनिया की तरफ आयें अब उनकी हिजरत यह नही है कि वह अपना आबाई वतन तर्क करके किसी दूसरे शहर को अपना वतन बना लें, और अपने अईज़्ज़ा व अक़रबा को ख़ैरबाद कहके दूसरे लोगों के साथ रिशत–ए–अख़ूवत में मुनसलिक हो जायें बल्कि इनकी हिजरत यह है कि वह ख़ुदा के दीन को मुस्तहक बनाने, इसकी शरीअत को नाफिज़ करने और इसके क़ानून को राईज करने के लिए हर तरह की क़ुर्बानी दें, वह मुनकर को ख़त्म करने गुनाहों को नेस्त व नाबूद करने और ज़ुल्म व नाइन्साफ़ी का क़ला कमां करने के लिए हर तरह की जिद्दोजहद करें और नेकी को आम करने, खुदा की बन्दगी को बरूये

कार लाने और अदल व इन्साफ़ को मुस्तहकम करने के लिए अपनी तमाम तवानाईयों और जुम्लह सलाहियतों को सर्फ करें।

हिजरत का यही वह बुनियादी मज़मून है, जिसके लिए यह तारीख़ वजूद में आई और इस्लाम को फ़रोग़ हासिल हुआ, यही तमाम इन्सानी कामियाबियों का पेश ख़ेमा है, और इससे तमाम नाक़ाबिले तस्ख़ीर पर काबू पाया जा सकता है, जो बज़ाहिर नामुमकिन मालूम होता हे, इस मफहूम को हम जितना ही ज़्यादा अपनी ज़िन्दगियों में आम करेंगे और इजतमाई, तमद्दुनी, सियासी और इक्तेसादी मामलात में इसको रहनुमां बनायेंगे, हमारी पेचीदगियां दूर होंगी, हमारी परेशानियों और बेइतमिनानियों का ख़ात्मा होगा और हमारे तमाम उलझे हुए मसाएल हल होंगे।

आमतौर से हमने हिजरत को तारीख़े इस्लाम और वाक़ियात की तरह महज़ एक इत्तेफ़ाक़ी वाकिया समझ रखा है। हालांकि हिजरत का वाकिया दरअस्ल इस्लाम की कामियाबी और इसकी सरबुलन्दी का राज़ है यह वह कलीद है जिससे हक़ व इन्साफ़ का कुफ्ल खोला गया और इन्सानों के लिए एक नई ज़िन्दगी की राह मुतय्यइन हुई और यह एलान हुआ कि आज खुदा का दीन ग़ालिब आ गया और रास्ते की सारी तारीकियां और दुश्वारियां दूर होगईं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के झण्डे के नीचे अबूजहल और अबू लहब का परचमे कुफ्र व ज़लालत सरनंगूँ हो गया। तौहीद व ईमान के सामने कुफ़्र व शिर्क की सारी ताक़तें फना होगईं और आज से इस्लाम और सिर्फ इस्लाम इन्सानों का दीन क़रार पाया।

आज और तारीख़ के हर दौर में मुसलमानों की यह बड़ी सआदत होगी कि वह हिजरत के वाकिये के साथ इसकी तमाम खुसूसियात को मुस्तहज़र रखें, जो इसके साथ साथ वा बस्ता हैं और ज़िन्दगी के हर मरहले में इसको मशअले राह बनायें, और हिजरत के इस बुनियादी मफ़हूम पर नज़र रखें ताकि पेश आने वाले हालात का मुकाबला करने और मुश्किल से मुश्किल औक़ात में अपने ऊपर काबू रखने की कूवत इनमें मौजूद रहे। इसलिए कि एक मुसलमान की ज़िन्दगी हमादम ना मवाफ़िक़ हालात की ज़द में होती है, अगर इसमें यह ख़ुसूसियत न हो और इसकी नज़रों में वह औसाफ़ न हों जो हिजरत के औसाफ़ समझे जाते हैं वह बहुत जल्द हालात की नामुसाअदत से मरऊब होकर शिकस्त खा जाता है और ज़िन्दगी को कामियाब बनाने का जज़्बा इसके अन्दर से मफ़कूद हो जाता है।

साल हिजरी का मुबारक आग़ाज़ हमसे इसी बात का मुतालबा करता है वह हमसे हिजरत के औसाफ़ व खुसूसियात का तालिब है, मौजूदा हालात में जो हर मुल्क के मुसलमानों को दरपेश हैं, इस बात की ज़रूरत इन्तहाई शिद्दत से महसूस होती है कि हम बार–बार सीरत के

शेष पृष्ठ.....25 पर

इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

फैमिली प्लानिंग

–नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

प्रश्नः इस्लाम फैमिली प्लानिंग का विरोध कर जनसंख्या में असंतुलन क्यों पैदा करता है?

उत्तरः आज विश्व में जनसंख्या रोको अभियान बड़े ज़ोरों से चलाया जा रहा है। इसके लिए न जाने क्या–क्या साधन अपनाए जा रहे हैं। भारत सरकार भी जनता से जनसंख्या कम करने की अपील कर रही है कि देश में प्रकृतिक सम्पदा और संसाधनों की कमी है, जिसके कारण भविष्य में खाने–पीने और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कमी हो जाएगी, जिससे निर्धनता बढ़ जाएगी और स्थिति विस्फोटक हो जाएगी। अतः लोगों को कम से कम बच्चा पैदा कर देश को खुशहाल बनाना चाहिए। एक दृष्टिकोण से कहीं न कहीं ये अपील हत्या को भी बढ़ावा दे रही है। ख़ैर! इस्लाम इस विषय में क्या कहता है आइये देखते हैं।

पवित्र कुर्आन कहता हैः–

"और न मारो अपनी संतान को निर्धनता के भय से, हम जीविका देते हैं उनको और तुमको, निःसन्देह उनका मारना बड़ी गलती है"।

(सूरः बनी इस्राईल–31)

पवित्र हदीस में हैः–

"हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि विवाह करो, क्योंकि मैं तुम्हारे द्वारा दूसरी उम्मतों पर तुम्हारी अधिकता दिखाऊँगा"। (ज़ादुलमआद)

"हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि इस उम्मत में वह व्यक्ति बहुत अच्छा है जो ज़्यादा बच्चे वाला है"।

(ज़ादुलमआद)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अधिक बच्चे जनने वाली महिला से विवाह करने की उम्मत को प्रेरणा दी। (मामूलाते नबवी)

इस्लाम धर्म साइंसी मज़हब–

इस्लाम एक साइंसी मज़हब है, जिस चीज़ को उसने मना किया उसकी हानियों को भी विश्व के सामने उजागर किया। अब फैमिली प्लानिंग की हानियों को दुनिया अपनी आखों से देख रही है। चूंकि इस्लाम एक प्राकृतिक धर्म है। अतः उसने प्रथम दिन से ही प्रकृति से खिलवाड़ करने वालों को चेताया है। लेकिन जहां कहीं भी लोगों ने इस्लामी चेतावनी को नज़र अन्दाज़ किया, वहां उन्हें गंभीर परिणाम भुगतने पड़े। अतः हम आगे उन रोगों की निशानदेही करेंगे जो फैमिली प्लानिंग के कारण होते हैं।

फैमिली प्लानिंग की हानियाँ–

हकीम तारिक़ महमूद चुग़ताई अपनी पुस्तक "सुन्नते नबवी और जदीद साइंस" में लिखते हैं कि एक महिला को बेहोशी के दौरे पड़ते थे, बहुत इलाज कराया लेकिन नतीजा नदारद। थक–हार कर मेरे

पास आई। बातचीत से पता चला कि बेहोशी के दौरे उस दिन से आ रहे हैं जिस दिन से कापर टी लगवाया है।

इसी प्रकार हकीम साहब लिखते हैं कि एक महिला पागल हो गई, जाँच–पड़ताल के बाद पता चला कि उस महिला ने लगातार दो महीने गर्भ निरोधक गोलियाँ इस्तेमाल की थीं।

डॉक्टरों का कहना है कि इन दवाओं के इस्तेमाल से पेट और शरीर फूल जाता है तथा शरीर में गंभीर रोग जड़ जमाने का प्रयास करने लगते हैं।

GYNAECOLOGIST की चेतावनी–

एक प्रसिद्ध GYNAECOLOGIST मेंड़ी क्वीन जो मेक्सिको यूनिवर्सिटी चीफ हैं, ने महिलाओं को चेताया है कि "यदि बच्चे कम करने के लिए गर्भ निरोधक दवाओं का सेवन किया तो अनेक रोगों से जकड़ ली जाओगी, यही नहीं बल्कि कैंसर जैसी बीमारी तुम्हारे सर मंडलाने लगेगी"।

डब्लू० एच० ओ० की चेतावनी–

अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन ने महिलाओं के ब्रेस्ट और वर्जाइना कैंसर के कारण में गर्भ निरोधक दवाइयों को भी शामिल किया हैं

रिपोर्ट के अनुसार जो महिलाएँ ऐसी दवाईयाँ लगातार इस्तेमाल करती हैं उन्हें किसी दिन भी कैंसर हो सकता है।

सरकार की दोगली नीति–

एक ओर सरकार जनसंख्या रोकने हेतु नये–नये साधन उपलब्ध करा रही है तो दूसरी ओर भ्रूण हत्या को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे रही है। सरकार का भ्रूण हत्या को ग़ैर क़ानूनी क़रार देना तो बिल्कुल सही निर्णय है, लेकिन जनसंख्या रोकने हेतु नये–नये साधन उपलब्ध कराना भी तो मानवता के विरुद्ध है। सरकार का ये तर्क गले नहीं उतरता कि जनसंख्या वृद्धि से निर्धनता आती है। क्या हमारे देश में निर्धनता का कारण जनसंख्या वृद्धि है अथवा भ्रष्टाचार? नेता और शासक–प्रशासक यदि जनता का वाजिब हक दे दें और प्राकृतिक सम्पदा का उचित दोहन करें तो इन्शाअल्लाह सम्पूर्ण देश सुखी होगा अपितु दूसरों की सहायता हेतु हम सक्षम भी होंगे। ❑❑

जिन्न व इन्स .....

वहां से असातिज़ा हिदाया के मसाइल की दलीलें मुहय्या करने में रहनुमाई फरमाते थे। चारों इमामों और अहले हदीस के इख़्तिलाफी मसाइल में वह यह तअस्सुर देते थे कि मसअ़ला राजेह और मरजूह (वरीयता तथा सामान्यता) का है मगर कोई मसअला गुमराही का नही है।

लिहाज़ा मैं अपने पाठकों से अनुरोध करता हूं कि वह ऐसे ना समझों की बातों की सुनी अन सुनी करें, हनफी, मालिकी, शाफई, हंबली और अहले हदीस सब को हक पर समझें, एक दूसरे की बुराई न करें आपस में मेल व मुहब्बत से रहें और जिस आलिम को अच्छा समझते हैं उस पर भरोसा करते हुए या इल्म रखते हैं तो अपनी तहकीक पर अमल करते हुए अपने रब की इबादत में लगे रहें और अपने रब को राज़ी करें। ❑❑

दारुल उलूम नदवतुल उलमा के फतुओं की खुसूसियत

—हज़रत मुफ्ती मुहम्मद जहूर नदवी

नोटः— अन्जुमन शबाबे इस्लाम की ओर से 8,9 दिसम्बर 2012 ई0 को ''जामिआ सय्यिद अहमद शहीद'' अहमद नगर (कटौली, मलिहाबाद) में दारुलउलूम नदवतुल उलमा के ओल्ड ब्वाइज़ (भूत पूर्व छात्रों) के सम्मान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिस में नदवी शास्त्रीयों ने नदवा और उसके दारुल उलूम की सेवाओं पर भाषणों तथा लेखों द्वारा समीक्षा परस्तुत की और भविष्य में अपनी सेवाओं पर प्रस्ताव पारित किये इसी भव्य समारोह में दारुल उलूम के पाँच वरिष्ठ गुरुजनों हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी नाज़िम नदवतुल उलमा, हज़रत मुफ़्ती मु0 ज़हूर नदवी (बड़े मुफ़्ती दारुल उलूम), मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी मोतमद तालीम नदवतुल उलमा, मौलाना सईदुर्रहमान आज़मी नदवी प्रधानाचार्य दारुल उलूम और मौलाना बुरहानुद्दीन साहिब शैख़ुत्तफ़्सीर दारुल उलूम को विशिष्ट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इन गुरुजनों ने भी अपने विचार मौखिक रूप से तथा लिखित रुप में प्रस्तुत करके श्रोताओं को लाभान्वित किया हज़रत मुफ़्ती साहब ने भी अपने लेख में दारुल उलूम के दारुल इफ़्ता की विशेषताओं से अवगत कराया निम्नलिखित लेख ''दारुल उलूम के फतुओं की ख़ुसूसियात (विशेषताऐं)'' उसी लेख से ग्रहीत हैं।

1. पहली खुसूसियत तो यह है कि इख़्तिलाफ़ी मसाइल में एअतिदाल (बीच) की राह इख़्तियार की है जो नदवे की अस्ल बुनियाद है, नदवे ने हमेशा एअ़तिदाल की बात कही है इसलिए उसके दारुल इफ्त का भी यही मिजाज है, मिसाल के तौर पर जुमे के सिलसिले में यहाँ से फत्वा दिया जाता है कि जिन देहातों में एक तवील मुद्दत से जुमा पढ़ा जाता है वहां पर जुमा काइम रखना जाइज़ है, ख़त्म नहीं करना चाहिए, अलबत्ता जिन देहातों में जुमा काइम नहीं है वहां जुह्र पढ़ना चाहिए, यह दीनी दावती काम के लिए ज़रूरी है, फिक्ही मजाहिब में यह मिस्र की शर्त नहीं है, खुद फुकहाए—अहनाफ ने मिस्र की शर्त में तखफीफ़ से काम लिया है, कसबात को भी मिस्र के हुक्म में माना है एअ़तिदाल की दूसरी मिसालः मुतल्लक़—ए—सलासा की है कि एक ही मजलिस में तीन तलाक़ देदी है तो अगर तलाक़ देने वाला अहले हदीस है तो उसके हक में यह एक तलाक़ है इद्दत में रुजुअ़ कर सकता है (और बाद इद्दत हलाला के बिना उससे निकाह कर सकता है) लेकिन अगर वह शख़्स हनफी है और अहले हदीस से फत्वा लेकर अपने नफ़्स के इत्तिबाअ़ में ऐसा करता है तो उसके लिए जाइज नहीं है क्योंकि आइम्म—ए—अरबआ़ (चारों इमामों) के नज़दीक यह तलाक़ मुग़ल्लज़ा है, इसमें

गुंजाइश नही निकाली जा सकती है।

एअ़तिदाल की तीसरी मिसालः अगर कोई इस्लाम में दाखिल होता है (और अपनी बीवी को) तीन तलाक दे देता है तो उसके लिए एक तलाक़ का फत्वा दिया जा सकता है इसलिए कि वह न तो हनफी है और न अहले हदीस, इस नुक्त–ए–नज़र से उस पर फ़िक्हे हनफी का कानून लागू नही किया जा सकता है, अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी रह0 का एक वाकिआ तलाके सलासा (तीन तलाकों) के बारे में मशहूर है आपने मौलाना मुहम्मद शफी साहब और दूसरे बड़े उलमा की मौजूदगी में अपनी राय का इज़हार किया और सभों ने न सिर्फ उसे तस्लीम किया बल्कि कहा कि यह बात सय्यिद साहब ही कह सकते थे। (एक नव मुस्लिम ने अपनी बीवी को एक मज्लिस में तीन तलाक़ें दे दी थीं यह मसअला पूछे जाने पर सय्यिद साहब ने फ़रमाया था कि एक तलाक़ हुई उस पर हनफ़ी मसलक लागू न करना चाहिए)।

एअ़तिदाल की चौथी मिसालः इख़्तिलाफी मसाइल में हद से तजाबुज़ करना सही नहीं है जो जिस मसलक का हो वह उस पर अमल कर सकता है, खास तौर पर मुस्तहबात में बहुत शिद्द इख़्तियार करना कि एक दूसरे पे तअ़न व तशनीअ़ करना (बुरा कहना) और लड़ाई झगड़ा करना दुरुस्त नहीं है, आखिर इसमें क्या हरज है कि वह जिस को अफ़्जल समझता है उस पर अमल करे फ़ुरुई मसाइल में हद से तजावुज़ करना किसी एक राय पर इसरार करना और दूसरी राय की मुकम्मल नफी करना सही नहीं है।

2. यहाँ के दारुल इफ़्ता की दूसरी ख़ुसूसीयत यह है कि जवाब सादा और आम फहम ज़बान में दिया जाता है क्योंकि अक्सर सवाल करने वाले अरबी और मुग़लक (कठिन) ज़बान समझने की सलाहियत नहीं रखते हैं, कदीम उलमा की ज़बान ख़ालिस इल्मी और इस्तिलाही होती है जिसके समझने की वह सलाहियत नही रखते हैं इसलिए हमारे यहां पूछने वाले को उनकी सादा ज़बान में ही जवाब दिया जाता है कोई बात दफ़्अे दख्ले मुक़द्दर (कल्पित आपत्ति का उत्तर देना) की नहीं होती है कि वह किसी उलझन में मुबतला हों हत्तल इम्कान इग़लाक़ (कठिन) और तवील इबारत से एह़तिराज़ किया जाता है ताकि वह आसानी से समझ जाएं, ऐसे भी फतावे देखने में आते हैं कि वह फत्वा के हुदूद से बाहर हैं वह मक़ाला और इल्मी तहकीक़ के हुदूद में दाखिल हो गये हैं गोया मुस्तफती किसी चौराहे पर हैरान व परेशान खड़ा है उसको सीधी राह नहीं मिल रही है वह करे तो क्या करे।

3. तीसरी खुसूसीयत यह है कि मुब्तदीईन (दीन में नई बात अपनाने वालों) के रद में कोई तेज़ तुन्द जुम्ला इस्तेमाल नहीं किया जाता है बल्कि मतानत (धैर्य) और

संजीदगी से जवाब दिया जाता है, मुब्तादिईन (दीन में नई बात अपनाने वालों) के बाज़ आमाल शिर्किया हैं उनके जवाब में उनको मुश्रिक या काफिर के लफ्ज़ से याद नहीं किया जाता है, बाज़ ग़ाली (बढ़ा चढ़ा कर बात करने वाले) फिक्र के लोग उनको मुश्रिक और काफिर कहते हैं वह कहते हैं कि शिर्क किया तो मुश्रिक हुए, कुफ्र किया तो काफिर हुए, हम तावील करके उनको शिर्किया अमल करने वाला करार देते हैं मुश्रिक नहीं कहते हैं, मुश्रिक के कुल्ली (सारे) हुक्मो में दाखिल नहीं करते हैं, फ़िरक़ के मुतअल्लिक़ जो फतावे यहां से दिये गये हैं उनमें यह खुसूसीयत नुमायां तौर पर नज़र आएगी।

हदीस शरीफ में है कि जिन में तीन खसलतें (बाते करे तो झूठ बोले, अमानत में खियानत करे और वादा खिलाफी करे) पाई जाएं तो वह मुनाफ़िक़ है यह वह मुनाफ़िक़ नही है जो आं हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में मुनाफिकीन का गिरोह था, यह निफाक वाले अमल वाला मुनाफ़िक़ कहलाएगा।

4. यहाँ के दारुल इफ्ता की चौथी खुसूसीयत यह है कि दौरे हाजिर के मसाइल (आधुनिक समस्याओं) चाहे वह मुआशरती (सामाजिक) हो या कारोबारी हों इमरानी (नागरिगता से सम्बन्धी) हो इक्तिसादी (आर्थिक) जराये आमदनी की जदीद शक्लें हों जो मौजूदा दौर (आधुनिकता) में नई–नई शक्लों में राइज हो गई हैं उनकी शरई हैसियत वाज़ेह करना बदलते हुए हालात में उन मसाइल का शरई हल पेश करना जदीद दौर का चैलेंज है उसमें काफी तहरीक़ व तहक़ीक़ (अनुसंधान) की जरूरत है ऐसे मसाइल में हमारे यहां खूब ग़ौर व फ़िक्र और इजतिमाई बहस व मुनाकशे (वाद विवाद) के बाद ही जवाब लिखा जाता है उसके साथ दीगर उलमा से भी रुजुअ़ करके अमल करने की हिदायत दी जाती है।

5. पांचवीं खुसूसीयत यह है कि मुल्क में बहुत से दारुल इफ्ता हैं मशहूर व मारुफ़ अहले इल्म हैं जो दीनी मालूमात और दीनी रूह व मिज़ाज से वाकफियत रखते हैं उनसे भी इस्तिफ़ादा किया जाता है ताकि इख़्तिलाफ न हो, उम्मत में इन्तिशार न हो, उलमा के साथ अवाम का हुस्ने ज़न काइम रहे।

एक अहम खुसूसीयत यह भी है कि इस्तिफ़ता के जवाब में हुक्मे शरई बताने के साथ दावती और तज़कीरी पहलू की तरफ़ भी तवज्जुह दिलाई जाती है यह चन्द बातें मेरे ज़िहन में थी जो पेश की गई वरना यहां कि खुसूसीयात के लिए एक दफ़्तर की ज़रूरत है, अल्लाह तआ़ला हम लोगों के अमल को क़बूल फरमाए और ईमान पर खातिमा बिल ख़ैर फरमाए।

आमीन!

❖❖❖

तीन कुव्वतों की ज़रूरत

—मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी —अनु0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

ज्ञान, धन और सत्ता

अभी जोधपुर, औरंगाबाद और लखनऊ के कॉलेजों में जा चुका हूँ, तो जब लड़कों से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने को कहा जाता है तो आधी अंग्रेज़ी और आधी उर्दू बोलते हैं। अजीब है कि न इधर के हैं और न उधर के। इससे छुटकारा पाने, खोया हुआ सम्मान वापस लाने और प्रतिष्ठा बहाल करने के लिए तीन ताकतों की ज़रूरत है। एक पद, दूसरा धन और तीसरा ज्ञान। ओहदे में शक्ति है, पैसे में ताक़त है और इल्म में कूव्वत है। पद की शक्ति अपनी जगह है उसका इन्कार नहीं करता उसके अन्दर ताक़त है। पैसे के अन्दर पॉवर है, यदि कोई इसका इन्कार करे तो गलत है।

और ज्ञान के अन्दर भी शक्ति है, इसका कोई इन्कार करता है तो गलत है, लेकिन इन तीनों में ज्ञान की शक्ति सबसे अधिक है। इल्म की कूव्वत के आगे बड़े से बड़े झुक जाते हैं। अल्लाह ने इल्म के अन्दर ताक़त रखी है। इल्म दिमाग है, पद और सत्ता ढ़ाँचा है, धन चलने–दौड़ने के लिए पैर और सवारी है। यदि शरीर के अन्दर शक्ति हो तो ज़ाहिर है कि उससे सारे काम जुड़े हैं और यदि पैर में ताकत है तो चल सकेगा। एक स्थान से दूसरे स्थान जा सकेगा। इसलिए जैसा कि मैंने पहले कहा कि धन पैर है खड़े होने के लिए और ज्ञान बड़े होने के लिए और ओहदा लोगों के मार्गदर्शन तथा उत्पत्तियों को ठीक करने के लिए है। तो तीनों में अल्लाह ने ताक़त रखी है। अब तीनों चीज़ों में से कोई भी हमारे पास नहीं है। अर्थात पद हमारे पास नहीं है, पैसा भी ओहदे से ही सम्बन्धित है। ओहदा जब कमज़ोर होता है तो पैसा होते हुए भी आदमी कमज़ोर होता है। लेकिन एक चीज़ है ज्ञान वह बहरहाल अपने अन्दर आज भी ताक़त रखता है और लोहा मनवा लेता है और जो कुर्आन में आता है "लियुज्हिरहू अलद्दीनि कुल्लिही" अर्थात अल्लाह चाहता है कि ये दीन भारी पड़ जाए और सारे धर्म दब जाएं। तो ये सब ओहदे और ताक़त से होगा और दूसरा इल्म से होगा अर्थात समस्त धर्म शैक्षिक रूप से किस जगह है और इस्लाम किस स्थान पर है तो इस्लाम ज़ाहिर है कि पूरा का पूरा इल्म है और ये एक सर की हैसियत रखता है और जितने धर्म हैं वह सब सर से नीचे हैं, और ज़ाहिर है कि सर, सर है, सर में दिमाग़ है जो सबको चलाता है। आदमी अक्लमंद हो और यदि वह पैर कमज़ोर हो तो वह बैठे–बैठे भी काम कर सकता है। हमारे डॉक्टर आसिफ किदवाई ने बहुत सी किताबें लिखी हैं, और क्या क़लम था उस अल्लाह के बन्दे का,

उनका हाल क्या था? मैं उनके पास हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 के साथ कभी–कभी जाता था। लगभग 18 साल की उम्र से वह बिस्तर पर थे और 69 साल तक एक करवट पर रहे। पूरा बदन उनका जख़्मी हो गया। यहां तक कि अन्तिम समय में हमारे हज़रत मौलाना रह0 उनके पास गए। इससे पहले कभी उन्होंने शिकायत नहीं की, लेकिन उस दिन कहा, हज़रत! बर्दाश्त नहीं होता, दुआ कर दीजिए कि ईमान पर ख़ात्मा हो जाए। लेकिन सब काम लेटे–लेटे करते थे। किताब खोल लेते और यूं एक हाथ से लिखते तथा एक हाथ से पढ़ते थे। इस तरह पचास साल तक किया और पचास–साठ से ज़्यादा किताबों के लेखक हैं। ये है दिमाग। तो ज्ञान बहुत विस्तृत चीज़ है। जिसको अल्लाह ने पैसा दिया है वह ताक़त है, उससे चलता है और खड़ा होता है तथा पद व सत्ता गाइड है, उससे मार्गदर्शन करता है। अतः अब लड़ाई किसी भी तरह की जाइज़ नहीं, जैसा कि एक ज़माने से रहा है कि ये अंग्रेजों की ज़बान है कि अंग्रेज़ी सीखी नहीं जाएगी। अंग्रेज़ों ने इसका विरोध किया। लेकिन हमारे उलमा ने ऐसा किया था मगर अब वह दौर चला गया, उस समय उसकी आवश्यकता थी।

अब अंग्रेज़ी हमारी ज़बान है इसलिए कि सारी ज़बाने खुदा की हैं, इन सब ज़बानों में खुदा की निशानियां हैं "वख्तिलाफु अलसिनतिकुम व अल्वानिकुम" तो उसके निशानियाँ अलग हैं, जिस तरह अल्लाह को पहचानने की सूरतें अलग–अलग हैं ऐसी ही ज़बानें अलग–अलग हैं, तो जिस तरह उर्दू में हम्द व सना अल्लाह की स्तुति व प्रसंशा होती है, अरबी में होती है, उसी तरह हिन्दी और अंग्रेज़ी में भी हम्द व सना होती है। अल्लाह की प्रसंशा उद्देश्य है चाहे किसी भाषा में हो, अब यदि कोई केवल हिन्दी जानने वाला है, उर्दू नहीं जानता तो अल्लाह की हम्द कैसे करेगा? तो उसको हिन्दी में करना चाहिए। अल्लाह के लिए हिन्दी अजनबी नहीं है, वह समस्त भाषाओं का रचयिता है, उसके लिए कोई भी मुश्किल नही हैं, तो हमारे लिए ये ज़रूरी हो गया है कि हम ज्ञान व धन दोनों शक्तियों को लेकर उस तीसरे ताकत तक पहुंचने की कोशिश करें और उसके माध्यम से इस्लाम को आम करें। ये हमारी ज़िम्मेदारी है। कितने ऐसे लोग हैं जो कॉलेजों में भाग रहे हैं कि अंग्रेज़ों का दौर चला गया लेकिन अंग्रेज़ी को छोड़ गया और अंग्रेज़ी के जो प्रभाव हैं उनको छोड़ गया। अब उनके प्रभाव को इस्लामी प्रभाव में बदलना है और जिस प्रकार फारसी को मुसलमान बनाया है ऐसे ही अंग्रेज़ी को भी मुसलमान बनाना है, और ये हो जाएगा कुछ दिनों में। क्योंकि *इस्लामी लिट्रेचर* अंग्रेज़ी में बहुत आ रहा है यहां पर काम कम हो रहा है, बाहर बहुत ज़्यादा हो रहा है। ऐसा लगता है कि कुछ दिनों में अंग्रेज़ी भाषा मुसलमान

शेष पृष्ठ.....25 पर

सभ्य समाज के लिए निर्माणकारी मीडिया की आवश्यकता

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

व्यक्तित्व विकास, बौद्धिक उत्थान और चरित्र निर्माण में पत्र—पत्रिकाओं और रेडिया —टेलीवीज़न का बड़ा महत्व है, विशेष रूप से उन देशों में इनका महत्व और भी बढ़ जाता है जहाँ के नागरिकों ने साम्राजी सत्ता के बोझ तले दब कर एक लंबा ज़माना गुज़ारा है, और अत्याचारी यूरोपीय अवैध नियंत्रण में रह कर गुलामी का अपमानित जीवन व्यतीत किया है, जिसके कारण इन देशों के नागरिक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अन्य क़ौमों से जीवन के सारे स्तरों पर पिछड़ गये और विश्व परिवार में बेहैसियत होकर रह गये, लिहाज़ा साम्राजी सत्ता से मुक्ति प्राप्ति के बाद अब इन देशों को इस समय सर्वाधिक आवश्यकता इस बात की है कि वे एक मानवीय नैतिकता से परिपूर्ण चरित्रवान समाज का निर्माण करें और ज़्यादा से ज़्यादा इस पर ध्यान दें, इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सबसे प्रभावशाली तो शिक्षण संस्थान होते हैं, किन्तु इसके बाद इस क्षेत्र में प्रभावी रोल मीडिया का होता है चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रानिक, इस लिए कि जन कल्याण व लोकहित वाले कामों की ओर जनसाधारण का ध्यान आकृष्ट करने में यह मुख्य भूमिका निभाता है, इसी प्रकार बौद्धिक विकास, मन—मस्तिष्क के शुद्धिकरण तथा जीवन— दीक्षा में भी विशेष रोल अदा करता है। बेशक मीडिया लोगों के मनोरंजन के शौक और सामान्य ज्ञान की अभिरुचि की ज़रूरतों को पूरा करता है, लेकिन इससे कहीं बुलंद लक्ष्य यह है कि समाज को सभ्य बनाया जाए और चरित्र निर्माण जैसे रचनात्मक कार्य किये जाएं इन्हीं कर्मों को सर्वोपरि होना चाहिए और अन्य सारी बातों को दूसरे नम्बर पर रखना चाहिए, मनोरंजन पावन चरित्र और कर्म व संघर्ष वाले जीवन को बली चढ़ा कर नहीं होना चाहिए, क्योंकि यह निर्माण और विकास की राह में बहुत बड़ी रुकावट है, अतः यदि हम चाहते हैं कि पूर्वी देशों के नागरिक भी दुनिया के अन्य सभ्य विकसित समाज के समकक्ष खड़े हों और जीवन के तमाम क्षेत्रों में उन सभ्यराष्ट्रों से मुकाबला करें तो हमें सर्वप्रथम चरित्र निर्माण और संघर्ष भरे जीवन वाले समाज की रचना के क्षेत्र में काम करना होगा, लेकिन जब हम इस्लामिक देशों में इन महत्वपूर्ण साधनों के प्रयोग के सम्बन्ध में वहां की सरकारों के रवैये की समीक्षा करते हैं तो बहुत अफसोस और खेद होता है कि इन लाभकारी साधनों का प्रयोग विनाशकारी कार्यों में हो रहा है और यह चरित्र को खराब करने तथा इस्लाम से दूरी पैदा करने का कारण बन रहे हैं।

अब तो यही दिखाई पड़ता है कि पत्र—पत्रिकाएं अपने पाठकों का टेंशन बढ़ाती हैं और भावनाओं को उत्तेजित

करती हैं तथा लाभकारी मानवीय परम्पराओं और नैतिकता से दूर करती जा रही हैं मानवीय सभ्य समाज के लिए घातक सामग्री परोसने से भी बाज़ नहीं आतीं, देश–दुनिया की उन खबरों को बढ़ा–चढ़ा कर पेश करती हैं जिनका सम्बन्ध इन्सान के व्यक्तिगत जीवन से होता है, इन घटनाओं और अपराधों को बेनकाब कर समाज के सामने प्रस्तुत करती है और इसका थोड़ा भी ध्यान नहीं रखा जाता कि मासूम और सादा स्वभाव और चरित्रवान पाठकों के मन मस्तिष्क पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? इन पत्रिकाओं को न अपनी प्रस्तुति का ध्यान हैं और न पाठकों को होने वाले नुकसान पर उसे शर्म आती है। रचनात्मक सोच समाज से लुप्त होती जा रही है, मौजूदा बुरे हालात को बड़े आकर्षक शैली में प्रस्तुत करने का ही नतीजा है कि अच्छी और भली बातें लोगों के जीवन से समाप्त हो रही हैं, आगे चल कर पत्र–पत्रिकाओं से रचनात्मक और अच्छी बातें बिल्कुल समाप्त हो जाएंगी और बुरी खबरें और गंदी घटनाएं ही पढ़ने को मिलेंगी अंततः नई पीढ़ी का कोई व्यक्ति जब सुबह सवेरे उठ कर अख़बार पढ़ेगा तो उसे गंदी, झूठी व तबीयत को उलझा देने वाली घटनाओं और खबरों से ही सामना होगा और बाज़ारू लोगों की पसंद की खबरें और घटनाएं ही नई पीढ़ी को पढ़ने की मिलेंगी, और फिर पत्र–पत्रिकाओं को भी ऐसे ही बाज़ारू गंदी सोच के पाठकों की बड़ी संख्या मिल जाएगी।

इस ज़माने के जीवन में पत्रकारिता का असली मक़ाम यह है कि यह एक मार्निंग स्कूल है या देश में फैले हुए व्यवस्थित स्कूलों के समान इस ज़माने की नई पीढ़ी को शिक्षा–साहित्य और नैतिकता उपलब्ध कराने वाला अवधिक संस्थान है, लिहाज़ा अगर कोई नागरिक इस संस्थान से लाभांवित होना चाहे, और यह स्वाभाविक बात है कि लोग पत्रिकारिता से लाभांवित होने के लिए विभिन्न प्रकार की पत्र–पत्रिकाएं लेते हैं ओर उनका पढ़ना उनके दिनचर्या में दाख़िल है तो अब हमारी सरकारों की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वे नई पीढ़ी को खेल–तमाशों और बाज़ारु मनोरंजन के कुप्रभाव से रोकें क्योंकि इन चीज़ों से जहां एक ओर चरित्र हीन समाज जन्म लेता है वहीं दूसरी ओर धर्म से दूरी भी पैदा होती है और फिर खुदा का भय न होने के कारण इन्सान को बड़े से बड़ा कानून भी दुष्कर्म और संगीन अपराधों से नहीं रोक पाता। अतः इस साधन को पाठकों व श्रोताओं के लिए पाक–साफ़ बनाना और रचनात्मक उद्देश्यों के लिए इसका प्रयोग करना हमारी सरकारों पर परमआवश्यक है, सरकारें जिस प्रकार संगठित विद्यालयों को दूषित वातावरण से बचाने के लिए चिंता करती हैं इसी प्रकार दीक्षा के इस संस्थान की रक्षा करना उन पर ज़रूरी है, लेकिन अफसोस कि पत्रकार और मीडिया कर्मी इस पक्ष पर ध्यान नहीं देते और न ही इस पक्ष को उचित महत्व देते हैं, बल्कि विदेशी शैली का आँख बन्द करके

आज अपना रहे हैं और समाज के लिए क्या चीज़ निर्माणकारी है और क्या चीज़ विनाशकारी इसमें कोई फर्क़ नहीं करते।

जहाँ तक इलेक्ट्रानिक मीडिया का सम्बन्ध है विशेष रूप से टी.वी. तो इसका प्रभाव दर्शकों के मन–मस्तिष्क पर पत्र–पत्रिकाओं से कम नहीं पड़ता बल्कि अगर पूर्ण रूप से समीक्षा की जाए तो पता चलेगा कि इसका प्रभाव ज़्यादा तेज़ और खतरनाक होता है क्योंकि यह दो चीज़ों को प्रभावित करता है यानी आँख और कान, इसी प्रकार रेडियों के प्रभाव से भी इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि उसके प्रोग्राम भी बहुत कम ही ऐसे होते हैं जो अपने श्रोताओं में धर्म से दूरी वाला स्वभाव न उत्पन्न करते हों और खेल तमाशों वाली भावनाएं न पैदा करते हों, और अगर मान भी लिया जाए कि रेडियो के कार्यक्रम भावनाएं उत्तेजित करने वाले कम होते हैं तब भी इन्सान इसके प्रोग्राम सुन–सुन कर मेहनत संघर्ष और दृढ़ शक्ति जैसे सद्गुणों से खाली हो जाता है जब कि पूर्वी क्षेत्र के देशों को ऐसे ही गुणों वाले नागरिकों की अति आवश्यकता है।

दोनों प्रकार की मीडिया बहुत ही महत्वपूर्ण है और हमारी सरकारें इनको एक सीमा में रख कर रचनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग करने में समर्थ हैं और सही मायनों में इस प्रतिबंध से न सरकार का कोई नुकसान होगा और न ही समाज को कोई हानि, हाँ बाज़ारू और हीन स्वभाव के लोगों को कुछ मनोरंजन सामग्री से वंचित होना पड़ सकता है। अतः हमारी सरकारों, चिन्तकों और राजनेताओं को मात्र संगठित स्कूलों द्वारा दीक्षा कार्य का दायित्व निभाने पर ही बस नहीं करना चाहिए बल्कि दीक्षा की अन्य शैलियों को भी अपनाना चाहिए। दीक्षा के और कौन–कौन से प्रभावशाली साधन हैं इसके कुछ उदाहरण ऊपर की पंक्तियों में प्रस्तुत किये गये हैं। ❑❑

कुर्आन की शिक्षा.....
ऐसा तरीक़ा और सिद्धान्त बताया जो सब बीमारियों से बचाये और सबके बदले किफायत करे और वह तरीक़ा इस्लाम है जिसके लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और कुर्आन भेजे गए। दूसरी बात ये मालूम हुई कि अल्लाह की तरफ से यही तरीक़ा जारी है कि बुरे लोग हर नबी के खिलाफ और अल्लाह की हर किबात में मतभेद को पसन्द करते रहे और कोशिश करते रहे तो अब ईमान वालों को काफिरों की बदसुलूकी और फसाद से तंगदिल न होना चाहिए।

❖❖❖

जगनायक .....
जाहिलियत में अपने दुश्मन को देने के लिए तैयार नहीं हुए थे, अब क्या इस्लाम में ऐसा करेंगे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने इख़्तियार किये हुए तरीके पर कायम रहें हम आपके साथ हैं इस पूरी मुद्दत में जमाअत सहाबा ने अपने ईमान की पुख़्तगी साबित कर दी यहां तक की यह मुसीबत हटा ली गई। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः ईद कुर्बा के मौके से बाज़ मदरसे वाले और अंजुमनें कुर्बानी का नज़्म करती हैं जो जानवर कुर्बानी के लिए लाए जाते हैं उनमें बाज़ मर जाते हैं, यह लोग उन मुर्दा जानवरों के चमड़े उतार लेते हैं और गोश्त फेंक देते हैं, सवाल यह है कि इन मुर्दार के चमड़ों को बेचना और उन की कीमत काम में लाना कैसा है?

उत्तरः मुर्दार जानवर के चमड़े दबाग़त के बाद बेचना और उनकी कीमत काम में लाना दुरुस्त है। हदीस में है कि हज़रत मैमूना की एक बकरी मर गई थी लोगों ने उसे फेंक दिया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस बकरी के पास से गुज़र हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि इसका चमड़ा उतार कर तुमने दबाग़त क्यों न दे दी, फिर तुम उससे फाइदा उठाते इस रिवायत की बिना पर फुक़हा ने सराहत की है कि मुर्दार की खाल से दबाग़त के बाद फाइदा उठाना और बेचना व खरीदना दुरुस्त है। दबाग़त से पहले बेचना जाइज़ नही है अगर ऐसी खाल फ़रोख़्त कर दी गई तो उसकी रक़म ज़रूरत मन्दों पर सदक़ा करना ज़रूरी है।

(हिदाया 34/3)

नोटः हज़रत आइशा रज़ि0 की बयान की हुई एक हदीस से मालूम होता है कि चमड़े में नमक लगा देने से दबागत हो जाती है।

प्रश्नः आतिशबाज़ी व पटाखे की तिजारत करना कैसा है? बाज़ मुसलमान पटाख़े की तिजारत करते हैं क्या शरअन वह तिजारत दुरुस्त है?

उत्तरः आतिश बाज़ी गुनाह का काम है और फुजूल खर्ची में शामिल है कुर्आन मजीद में फुजूल खर्ची करने वालों को शैतान का भाई कहा गया है। (बनी इस्राइलः 27) लिहाज़ा उसकी तिजारत करना गुनाह के कामों में मदद करना है। अल्लाह तआला ने उससे रोका है। (अलमाइदाः 2) लिहाज़ा इस तरह की तिज़ारत से बचना जरूरी है।

प्रश्नः बच्चों के खेल के लिए जो गुड़ियाँ होती हैं उसकी तिजारत करना और गुड़ियों को घरों में रखना बच्चों को उनके ज़रिए बहलाना कैसा है?

उत्तरः गुड़ियों की शक्ल व सूरत अगर जानदार की न हो तो उसकी तिजारत में कोई हरज नहीं, लेकिन अगर जानदार की शक्ल व सूरत हो तो उसकी तिजारत करना और उनको घरों में रखना जाइज़ नहीं है। इसी तरह बच्चों को खेलने के लिए देना भी दुरुस्त नहीं है। हदीस में जानदार की तस्वीर रखने पर सख़्त वईद आई है। इमामे नबवी रह0 ने इस रिवायत की शरह में यह लिखा है कि जानदार की

तस्वीर बनाना और उसकी सनअ़त और कारीगरी हराम है। इब्ने आबिदीन की भी यही सराहत है।

(रद्दुल मुख़्तारः 647)

प्रश्नः जानवरों की हड्डियों की तिजारत दुरुस्त है या नहीं? क्या ज़ब्ह किये हुए और मुर्दार जानवरों की हड्डियों में कोई फर्क़ है? या दोनों का हुक्म यक्सां है?

उत्तरः इन्सान और सुअर के अलावा तमाम जानवरों की हड्डियों की तिजारत करना दुरुस्त है। चाहे जब्ह किया हुआ हो या मुर्दार।

(हिदायाः 39/3)

प्रश्नः कोई मुसलमान अपनी लाश गाड़ी से गैर मुस्लिम की लाश को स्पताल से उनके घर या दफ़्न की जगह तक उजरत लेकर पहुंचाए तो यह शरअन दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः इन्सानी हमदर्दी के पेशे नज़र अगर ऐसा किया जाए तो इसमें कोई हरज नही है। (फ़तावा हिन्दिया किताबुल इजारा बाबः 16)

प्रश्नः अगरबत्ती और लोबान लोग गलत जगह भी जलाते हैं उसकी तिजारत करना कैसा है?

उत्तरः अगरबत्ती और लोबान की तिजारत दुरुस्त है जो लोग इसको ख़रीद कर गलत जगह काम में जलाएंगे तो वह गुनहगार होंगे। यह तो उन चीज़ों में हैं जिसका इस्तेमाल सही कामों में होता है। मुर्दे के कफन में धोनी देने के लिए लोबान जलाते हैं, घरों और दूकानों में खुश्बू के लिए भी अगरबत्ती जलाते हैं, अलबत्ता अगर कोई इसका इस्तेमाल गलत करे तो इस्तेमाल करने वाला गुनहगार होगा। फुकहा ने सराहत की है कि जो चीज़ सिर्फ गुनाह के लिए हो उसकी खरीद व फरोख़्त दुरुस्त नही है। (रद्दुल मुख़्तारः 561/9)

प्रश्नः जानदारों की तस्वीरें फ्रेम करके दूकानों पर फरोख़्त के लिए रखना और उसका कारोबार करना कैसा है? बाज मुसलमान फिल्मी हीरो और हीरोइन, और दूसरे जानदारों की तस्वीरें फरोख़्त करते हैं, क्या शरअ़ में इसकी इजाज़त है?

उत्तरः जानदारों की तस्वीरें रखना उनको फ्रेम करके उनकी खरीद व फरोख़्त करना शरअ़ में मकरूह तहरीमी और नाज़ाइज़ है फुकहा ने लिखा है कि जो चीज़ ब ज़ाते खुद गुनाह हो उसकी खरीद व फ़रोख़्त करना मना और मकरूह तहरीमी है। (दुर्रुल मुख़्तार अलारद्दुल मुहतारः 561/9)

प्रश्नः तयम्मुम कब किया जाता है?

उत्तरः जहाँ वुज़ू की ज़रूरत होती है जैसे नमाज़ पढ़ने या कुर्आन मजीद छूने वगैरह में वहाँ तयम्मुम उस वक्त किया जाता है जब पानी न मिले या पानी नुक्सान करे।

प्रश्नः कभी पानी करीब में होता है मगर इतने फासले पर होता है कि अपना सामान छोड़ कर पानी तक जाने में सामान के लिए खतरा होता है और नमाज़ का वक्त जा रहा होता है तो ऐसे में क्या तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ सकते हैं?

उत्तरः जब कोई सामान देखने वाला मददगार नही है और

पानी लेने जाने में सामान के लिए खतरा हो तो ऐसी हालत में तयम्मुम से नमाज़ दुरुस्त हो जाएगी वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

प्रश्नः पानी से नुक्सान पहुँचेगा क्या इसके लिए डॉक्टर से पूछना पड़ेगा?

उत्तरः अगर डॉक्टर बताए तो ज़्यादा पक्की बात है लेकिन अगर अपने तजुर्बे से अन्दाज़ा हो कि पानी नुक्सान करेगा तब भी तयम्मुम किया जा सकता है।

प्रश्नः क्या गुस्ल के बदले भी तयम्मुम किया जा सकता है?

उत्तरः गुस्ल की हाजत हो जाए और पानी न मिले या पानी नुक्सान करे तो गुस्ल के बदले भी तयम्मुम किया जा सकता है।

प्रश्नः सर्दियों में बहुत ज़्यादा ढ़न्डे पानी से वुजू या गुस्ल करने में नुक्सान का खतरा हो तो क्या वजू या गुस्ल के बदले तयम्मुम किया जा सकता है?

उत्तरः हाँ जब ढन्डे पानी से गुस्ल या वजू करने में नुक्सान का खतरा हो और गर्म पानी न मिल सके तो वुजू या गुस्ल की जगह तयम्मुम किया जा सकता है हदीस शरीफ में ऐसी मिसालें मौजूद हैं।

प्रश्नः सर में ज़ख़्म है ऐसी हालत में एहतिलाम (स्वप्न दोष) हो गया तो क्या गुस्ल की जगह तयम्मुम कर सकते हैं?

उत्तरः अगर पूरा जिस्म सिहत मन्द है और उसे धोने में कोई नुक्सान नही है तो ऐसी हालत में तयम्मुम जाइज़ न होगा बल्कि जख़्म छोड़ कर नहा लेंगे और ज़ख़्म पर पट्टी बाँध कर उस पर भीगा हाथ फेर लेंगे।

प्रश्नः तयम्मुम का क्या तरीक़ा है?

उत्तरः तयम्मुम का तरीका यह है– पहली बात पाक होने की नीयत करें कि यह फर्ज है।

फिर बिस्मिल्लाह पढ़ कर पाक मिट्टी पर दोनों हथेलियाँ मारें वह पाक मिट्टी पर हथेलियाँ मारना फर्ज है। फिर हथेलियों को पूरे मुँह पर (जिस तरह वजू में मुँह धोया जाता है) यह भी फर्ज़ है। फिर हथेलियां दोबारा पाक मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों को कोहनियों समेत मलें कि यह भी फर्ज़ है। बायें हाथ से दाहिना हाथ और दाहिने हाथ से बायां हाथ मलें, अंगूठी वगैरह पहने हों तो उसे खिसका कर उसके नीचे भी मलें। बस तयम्मुम हो गया यह बात कई हदीसों से साबित है जिसे अहनाफ और बाज दूसरे उलमा ने लिखा है। एक दूसरी हदीस से सिर्फ एक बार हाथ पाक मिट्टी पर मार कर मुंह और कलाई तक मलने का ज़िक्र है जिसे हज़रत अम्मार रज़ि0 ने बयान किया है। अहले हदीस और बाज दूसरे उलमा इस पर अमल करते हैं इस पर आपस में झगड़ना न चाहिए हर शख़्स अपने अपने मसलक पर अमल करे और बाहम मेल व महब्बत बाकी रखे।

प्रश्नः क्या गुस्ल और वजू के तयम्मुम का तरीका अलग अलग है?

उत्तरः नहीं गुस्ल या वजू दोनों का तरीक़ा एक है सिर्फ नीयत

का फर्क है और नीयत नाम है दिल के इरादे का बस अगर किसी को गुस्ल की ज़रूरत है उसने उससे पाक होने के लिए तयम्मुम किया तो वह पाक हो गया। इसी तरह जिसने वजू की ज़रूरत पूरी करने के लिए तयम्मुम किया वह पाक होकर बावजू की तरह हो गया।

प्रश्नः तयम्मुम किन चीज़ों पर जाइज़ है?

उत्तरः तयम्मुम पाक मिट्टी पर जाइज़ है पत्थर, कंकर की मिट्टी है, पत्थर से बनी सीमेन्ट भी मिट्टी है, चूना भी मिट्टी है, कच्ची पक्की ईंट भी मिट्टी है इसलिए सीमेन्ट और ईंट से बनी दीवार पर भी तयम्मुम जाइज़ है। चूना लगी दीवार पर भी तयम्मुम जाइज़ है। मिट्टी के बने कच्चे पक्के बरतनों पर भी तयम्मुम जाइज़ है।

प्रश्नः ऑयल पेंट से रंगी दीवार पर तयम्मुम जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः ऑयल पेंट लगी दीवार पर तयम्मुम जाइज़ नहीं है।

प्रश्नः ज़मीन से निकलने वाली धातुओं जैसे लोहा, ताँबा वगैरह पर तयम्मुम जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः धातुयें मिट्टी के हुक्म में नहीं हैं लिहाज़ा इन धातुओं पर तयम्मुम जाइज़ नहीं।

प्रश्नः तयम्मुम कब टूट जाता है?

उत्तरः जिन बातों से वजू टूटता है उनसे तयम्मुम भी टूट जाता है साथ ही जब पानी न मिलने के सबब तयम्मुम किया गया हो तो पानी मिलने पर तयम्मुम खत्म हो जाएगा इसी तरह अगर पानी नुक्सान करने के सबब तयम्मुम किया हो और अब पानी नुक्सान नहीं करता तो भी तयम्मुम ख़त्म हो जाएगा।

❖❖❖

पूज्य तू केवल रब को मान
ध्यान पूर्वक पढ़ कुर्आन
नबी मुहम्मद के पैरो को
अपना प्रिय भाई मान
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
इदारा

हिजरत का बुनियादी .....

मुख़्तलिफ़ पहलुओं का जायज़ा लेते रहें और इसमें हम अपने लिए इबरत व अमल के नमूने तलाश करते रहें।

इस मुबारक सीरत का सबसे रौशन, ताबनाक और अहम पहलू हिजरत का वाकिया है, जो हर दौर में मुसलमानों की रहनुमाई के लिए बिलकुल काफी और वाक़ई नमुना अमल और उसवये नबवी है।

❖❖❖

तीन कुव्वतों की .....

हो जाएगी, इतना लिट्रेचर आ रहा है। अब हम लोग उनकी मदद करें और अपने बच्चों को उनकी झोली में जाने से पहले बचा लें, क्योंकि अब उनकी दो चीज़ें हैं, नम्बर एक ज़बान लाए हैं, नम्बर दो अपना कल्चर लाए हैं, और होता ये है कि जब किसी का प्रभुत्व हो जाता है तो उसका प्रभाव शेष रहता है और उसके साथ उसका कल्चर भी भाता है जैसे कि एक दौर मुसलमानों का आया था, लोग उस पर गर्व करते थे। ❑❑

सच्चा राही बारहवें वर्ष में

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

"सच्चा राही" ने बारहवें वर्ष में प्रवेश किया जब कि उसका सम्पादक अस्सीवें वर्ष में है, (अल्हम्दुलिल्लाह) उसे 1960 ई0 से अब तक नदवे की सेवा का सम्मान प्राप्त है इन 11 वर्षों में सच्चा राही ने अपने दो वरिष्ठ तथा योग्य सहायक सम्पादकों की सेवाओं से वंचित हुआ जिनका उल्लेख पिछले वर्षों में आ चुका है, उनमें एक श्री हबीबुल्लाह आजमी थे दूसरे श्री मुहम्मद हसन अन्सारी अल्लाह तआ़ाला दोनों पर अपनी रहमत की वर्षा करता रहे विद्यमान सहायक सम्पादक श्री मुहम्मद गुफ़रान नदवी की बहुमूल्य सहयोग प्राप्त है वह भी 70 को पार कर चुके हैं अल्लाह तआला उनकी आयु में बरकत दे और उनके लाभदायक परामर्श मिलते रहें।

इस ग्यारह वर्षीय सेवाओं में सच्चा राही के माध्यम से बहुत कुछ लिखने का अवसर प्राप्त हुआ इसमें बहुत बार लेखक ने भूल चूक की होगी अल्लाह से प्रार्थना है कि जो भूल चूक पाठकों के ज्ञान में आई हो वह मुझ अयोग्य को क्षमा कर दें और ऐसी भूलों को खुदा करे हमारे पाठक भूल जाएं तथा जो लाभ दायक बातें उन तक पहुंची हैं उनको याद रखें, उनसे लाभ उठाएं एवं दूसरों को भी उनसे लाभान्वित करें।

इस ग्यारह वर्षीय काल में हमारा प्रयास यही रहा है कि समाज स्वच्छ रहे तथा समाज को सुख शान्ति मिले। हमारा मानना है कि समाज का वास्तविक सुधार खौफ़े खुदा (ईश भय) के बिना सम्भव नही हो सकता है अब हमने सदैव यही प्रयास किया है कि मानव मन में ईशविश्वास (अल्लाह पर ईमान) दृढ़ हो जिस समाज के लोगों में मानवता नही, सहानुभूति नहीं, उदारता नही दानशीलता नही, विनय तथा मानव प्रेम नही यह वह गुण हैं जिन के बिना अच्छा समाज नहीं बन सकता और यह गुण ईशविश्वास (ईमान बिल्लाह) तथा ईशप्रेम (हुब्बुल्लाह) के बिना प्राप्त नहीं हो सकते। इसी प्रकार जिस समाज में ईर्ष्या डाह, पक्षपात, स्वयं स्वार्थ जैसे विकार होंगे वह समाज सुख शान्ति से वंचित रहेगा और यह मानवीय विकार भी ईश भय के बिना मानव स्वभाव से दूर नहीं हो सकते। चोरी, डकैती, रक्तपात, आतंकवाद, घूसखोरी, व्यभिचार, स्त्रीगमन, बलात्कार, अत्याचार जैसे कुकर्म सबके निकट बुरे हैं। जुआ, मदिरापान को सब बुरा कहते हैं। कानून भी इन्हें रोकता है और इस पर दण्ड की व्यवस्था है। परन्तु ऐसे जो कार्य छुप छुपा कर हो सकते हैं समाज के विकृत लोग उनको कर के समाज में बिगाड़ उत्पन्न कर देते हैं और समाज में अशन्ति पैदा कर देते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि जहां समाज सुधार में कानून

शेष पृष्ठ.....30 पर

ईमान क्या है?

–शैख़ अब्दुल मजीद ज़ंदानी

–अनुवादः ज़ुबैर अहमद नदवी

अल्लाह तआ़ला के अस्तित्व पर विश्वास (ईमान)–

अल्लाह तआला के अस्तित्व पर विश्वास करना प्रत्येक मनुष्य के लिए अनिवार्य है।

यदि मनुष्य थोड़ी देर के लिए भी विचार करे तो अवश्य ही उसका दिल स्वीकार कर लेगा कि अल्लाह ही उसका सृजनहार है, उसी ने समस्त आध्यात्मिक व सांसारिक ज्ञान प्राप्ति के स्रोत उपलब्ध कराए वरना मनुष्य में इन ज्ञानों को प्राप्त करने की तनिक क्षमता न थी न ही इन ज्ञानों तक पहुँचना ही उसके वश में था, पवित्र कुर्आन कहता है–

अनुवाद– "और अल्लाह तआ़ला ने तुमको तुम्हारी माताओं के पेट से इस परिस्थिति में निकाला कि तुम कुछ भी न जानते थे तथा उसने तुमको कान दिए, आँख दी और दिल दिया ताकि तुम कृतज्ञता दिखलाओ।"

(सूरः अन्–नहल–78)

अतः उस अल्लाह के उपकारों का सर्वप्रथम चरण में उसका आभार व्यक्त करने के लिए, उस तक पहुँचने के लिए व उसके मअ़रिफ़त (पहचान) के लिए हम उसके ज्ञान के साधनों से काम लें तथा मंज़िल तक पहुँच जाएं। पवित्र कुर्आन कहता है–

अनुवाद– "अतः आप इसका ज्ञान रखें कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और आप त्रुटियों की क्षमा याचना करते रहिये।"

(सूरः मुहम्मद–19)

ब्रह्माण्ड के पालनहार के जो निर्देश मनुष्य को संसार व परलोक में मोक्ष प्राप्ति तक पहुँचाते हैं तथा वास्तविक सौभाग्य के रास्ते उस पर खोलते हैं, मनुष्य अपने वास्तविक सृजनहार को पहचाने बिना उसका अनुकरण नहीं कर सकता। अतः परिणाम घाटा सहने वालों में होगा।

तो क्या फिर मनुष्य का प्रथम दायित्व यह नहीं बनता कि अल्लाह की मअ़रिफत (पहचान) प्राप्त करे?

ज्ञान से ही ईमान का मार्ग प्रशस्त होता है–

मनुष्य यदि वास्तविक ईमान अर्जित करना चाहता है तो फिर उसे ईमान का ज्ञान प्राप्त करना पड़ेगा और अपनी बुद्धि को खोल कर उसकी वास्तविकता बैठानी होगी।

अनुवाद– "जो व्यक्ति यह ज्ञान रखता है कि जो कुछ आपके पालनहार की ओर से आप पर उतरा हुआ है वह सब सत्य है, क्या ऐसा व्यक्ति उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है? उपदेश को स्वीकार तो वही करते हैं, जिनको बुद्धि है।

(सूरः अर्रअ्द–19)

इस बात की आवश्यकता इसलिए है कि स्वयं से ज्ञान प्राप्त किए बिना केवल दूसरों की बातों में आने वाले व्यक्ति

का ईमान शीघ्र ही डगमगा जाता है।

जब प्रथम चरण में ही उसकी परीक्षा होती है और किसी ने कोई बात उड़ा दी और संदेह उत्पन्न कर दिया तो बहुत जल्द ही उसके ईमान में कमज़ोरी आ जाती है।

अनुवाद– "आप कहिए कि क्या ज्ञानी व अज्ञानी समान हो सकते हैं? नसीहत तो बुद्धिमान लोग ही प्राप्त करते हैं। (सूरः अज़्ज़ुमर–9)

और कुछ लोग अल्लाह की इबादत किनारे पर करते हैं फिर उन्हें कोई लाभ हो गया तो वे उस पर डटे रहते हैं और यदि उन की कुछ परीक्षा हो गयी तो मुँह फेर कर चल देते हैं, लोक व परलोक को खो बैठे, यही खुला घाटा है।

(सूरः अल्हज्ज–11)

अल्लाह के अस्तित्व के वैज्ञानिक प्रमाण

सर्वप्रथम कुछ बौद्धिक नियमों को याद रखें–

नियम 1– जिसका अस्तित्व न हो उसमें किसी वस्तु को बनाने की योग्यता नहीं होती।

बुद्धि इस बात को स्वीकार ही नहीं कर सकती कि जिसका कोई अस्तित्व न हो उसमें किसी वस्तु को बनाने की योग्यता है, बुद्धि इस बात को नहीं मान सकती कि जिसका कोई अस्तित्व न हो वह कैसे दूसरे को अस्तित्व प्रदान कर सकता है।

संसार की सम्पूर्ण व्यवस्था किसी शक्ति के अस्तित्व की सूचक है–

यदि हम दिन–प्रतिदिन उत्पन्न होने वाली सृष्टि पर विचार करें, चाहे उसका सम्बन्ध मनुष्यों से हो अथवा प्राणियों से या वनस्पति से इसी प्रकार हवा, वर्षा तथा दिन व रात पर विचार करें, सूर्य, चन्द्रमा, तारे, ग्रहों की परिक्रमा और समस्त सौर–मण्डल पर मंथन करें, इसी प्रकार पल–पल हाने वाले बदलाव पर विचार करें तो बुद्धि का अंतिम फैसला यही होगा कि यह सब कदापि किसी ऐसे व्यक्तित्व की कारीगरी नहीं हो सकती जिसका अस्तित्व ही नहीं है। बल्कि एक ऐसी शक्ति के चमत्कार हैं जो सबका सृजन करने वाली है और उसका अस्तित्व माननीय है। अतः पवित्र कुर्आन कहता है–

अनुवाद– क्या यह लोग बिना किसी सृजक के स्वयं ही उत्पन्न हो गए हैं अथवा यह स्वयं आत्म सृजक हैं या इन्होंने आकाश व धरती को उत्पन्न किया? यह विश्वास नहीं करते।

(सूरः अत्–तूर 35–36)

❖❖❖

दरमियाने क़अ़रे दरया तख़्ता बन्दन कर दई!
बाज़ मी गोई कि दामन तर मकुन हुश्यार बाश!

*****

अनुवाद– नदी की गहराई में मुझे पटरों से बन्द कर दिया है फिर कहते हो कि होशियार रहो दामन भीगने न पाये। आज कल के वातावरण में यह फारसी शेर ध्यान देने योग्य है।

गठिया का उपचार

—डॉ0 अनुराग श्रीवास्तव

गठिया के कारण घुटने के पूर्णरूपेण क्षतिग्रस्त हो जाने की स्थिति में जोड़ प्रत्यारोपण यानी री रिप्लेसमेंट सफल उपचार है। फिर भी इस संदर्भ में यह जान लेना आवश्यक तथा लाभदायक है कि घुटने की गठिया उम्र के साथ बढ़ने वाली समस्या है जिसमें जोड़ की सतह का कार्टिलेज धीरे–धीरे घिसता जाता है तथा हड्डी की सतह में भी घिसाव आने लगता है। परिणामस्वरूप पीड़ित व्यक्ति का पैर घुटनें से टेढ़ा हो जाता है और उसका चलना फिरना, नीचे बैठकर उठना, सीढ़ी पर चढ़ना और लगातार खड़े रहना दिक़्क़त तलब और तकलीफ़देह हो जाता है। यदि शरीर में घुटने की गठिया के लक्षण की शुरूआत होते ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार समुचित उपचार आरंभ कर दिया जाए तो काफ़ी हद तक घुटनों को क्षतिग्रस्त होने से बचाया तथा मर्ज़ को बढ़ने से रोका जा सकता है।

अधिकांश व्यक्तियों में रोग की प्रारंभिक अवस्था में घुटने के भीतरी भाग में कभी–कभी दर्द होता है तथा उन्हें सीढ़ी पर चढ़ने–उतरने में दिक़्क़त महसूस होने लगती है। तभी उसे समझ लेना चाहिए कि आस्टियो आर्थराइटिस यानी उम्र के साथ होने वाली घुटने की गठिया की शुरुआत हो चुकी है। दरअस्ल इस समय घुटने की गठिया की शुरुआत हो चुकी है। दरअस्ल इस समय घुटने में साइनेविचल फ्लुइड नामक तरल पदार्थ का बनना कम होने लगता है तथा उसकी चिपक भी कम होने लगती है। इतना ही नहीं, अस्थि संधि यानी जोड़ की सतह बनाने वाले कार्टिलेज के पुनर्नवीनीकरण की प्रक्रिया भी शनैः शनैः न्यून होने लगती है। फलस्वरूप कार्टिलेज घिस कर खुरदुरे होने लगते हैं और इस तरह से घुटनों में गठिया की शुरुआत होने लगती है।

यदि प्रारंभिक अवस्था में रोग का सही उपचार नहीं कराया गया तो घुटने के जोड़ की सतह और क्षतिग्रस्त होने लगती है तथा शीघ्र ही पीड़ित व्यक्ति घुटने की गठिया की द्वितीय अवस्था में पहुंच जाता है। यदि द्वितीय अवस्था में भी रोग का सही ढंग से उपचार करा लिया जाए तो काफ़ी हद तक बड़े ऑप्रेशन से बचा जा सकता है। इस अवस्था में रोगी की स्थिति के अनुसार कांड्रोप्लास्टी, आस्टियो कांड्रल ग्राफ्टिंग, कार्टिलेज ग्राफ्टिंग तथा आटोलोगस स्टेप सेल प्रत्यारोपण जैसे अनेक उपचारात्मक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

अगर द्वितीय अवस्था में भी गठिया का समुचित उपचार नहीं कराया गया तो यह जान लीजिए कि आने वाला समय रोगी के लिए और भी कष्टकारी हो सकता है। इस स्थिति में एच0टी0ओ0 या आंशिक घुटना प्रत्यारोपण का

सहारा लेना पड़ता है। इस क्रम में यह जान लेना आवश्यक है कि उपर्युक्त चिकित्सकीय विधियां कुछ वर्षों के लिए ही कारगर और मुफ़ीद हैं। तत्पश्चात पूर्ण घुटना प्रत्यारोपण की आवश्यकता पड़ती है। चिकित्सा विज्ञान में यह ऑप्रेशन क्षतिग्रस्त घुटनों के लिए लगभग 100 प्रतिशत सुरक्षित तथा कारगर माना गया है। यह प्रत्यारोपण लगभग 30 से 40 वर्षों तक कारगर रहने वाला एक मात्र उपचार है। यह ऑप्रेशन शरीर में किसी मांसपेशी तथा लिंगामेंट को काटे बग़ैर संभव है। प्रत्यारोपण की इस प्रक्रिया में दर्द नहीं होता और न रक्त बहता है समय रहते ऑप्रेशन न कराने पर घुटने की हड्डियां और लिंगामेंट अधिक क्षतिग्रस्त हो जाते हैं तथा रोगी का एकदम से चल फिर सकना रुक जाता है। इस परिस्थिति में यदि ऑप्रेशन किसी प्रकार करा लिया गया तो भी वांछित परिणाम नहीं निकलता और न रोगी कभी स्वस्थ हो सकता है। ❑❑

सच्चा राही बारहवें .....

की आवश्यकता है वहीं समाज के वास्तविक सुधार के लिए ईश भय भी अनिवार्य है। अतः समाज को अच्छा बनाने तथा विकृत लोगों को सच्चा समाजवादी बनाने के लिए सच्चा राही ईश भय को प्राथमिकता देता है और उसका प्रयास यही रहता है कि जहां एक ओर कानून चौकस रहे वही दूसरी ओर लेखक जन अपने लेखों से तथा चरित्रवान पुरुष अपने उच्च चरित्र से समाज को स्वच्छ रखने में निरंतर लगे रहें।

हम अपने लेखकों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने अब तक अपने ऐसे ही लेखों से सच्चा राही को सहयोग दिया है, भविष्य में भी हम उन से यही आशा करते हैं कि वह ऐसे ही लाभ दायक लेखों से अपना सहयोग ज़ारी रखेंगे।

लेख साहित्यिक हों, ऐतिहासिक हो, काल्पनिक हों, वैज्ञानिक हो, भौगोलिक हों जो भी हो उनमें समाज को लाभ पहुंचाने की बात अवश्य हो। सच्चा राही की यह नीति भी बराबर रही है कि उम्मत में अलगाव न पैदा हो हनफी, मालिकी, शाफ़ई, हंबली और अहले हदीस सब मिलकर रहें सब एक दूसरे को सत्य मार्ग पर मानते हुए एक दूसरे को सहन करें, बरेलवी और देव बन्दी दोनो हनफी हैं बाज़ बिदअ़त के कारण परस्पर झगड़ा चल रहा है। सच्चा राही ने उदारता को अपनाते हुए बराबर भ्रान्ति (ग़लत फहमियों) को दूर करने और मेल मिलाप बाकी रखने की चेष्ठा की है। सच्चा राही इस बात का भी प्रयास करता रहा है कि! उसके पाठक अपने वतनी भाइयों से अच्छे सम्बंध रखें, सच्चा राही "मानवता का सन्देश" के माध्यम से मानव जाति में मानव प्रेम बढ़ाने की हमेशा चेष्ठा की है।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह सच्चा रही के माध्यम से उन्हीं सेवाओं का सामर्थ्य दे जिन से देश तथा समाज में सुख व शान्ति बाकी रहे और उसे क़बूलियत (ईश स्वीकृत) भी मिले।

❖❖❖

अपनी बुद्धि का सदुपयोग कीजिए

—अबरार अहमद

"इनसे कहो कि यह कुर्आन ईमान वालों के लिए तो मार्गदर्शन और शिफ़ा (आरोग्य) है।" (कुर्आन 41:44)

अर्थात जीवन की तमाम समस्याओं के समाधान के लिए मार्गदर्शन और सभी प्रकार के रोगों से शिफ़ा कुर्आन में मौजूद है।

"और देखा, तुम्हारे रब ने मुधुमक्खी पर इस बात की प्रकाशना कर दी कि पहाड़ों में, और पेड़ों में, और टट्टियों पर चढ़ाई हुई बेलों में अपने छत्ते बना और हर तरह के फूलों का रस चूस और अपने रब की समतल की हुई राहों पर चलती रह। उस मक्खी के भीतर से रंग—विरंग का एक शरबत (शहद) निकलता है, जिसमें शिफ़ा है लोगों के लिए। यक़ीनन इसमें भी एक निशानी है उन लोगों के लिए जो सोच—विचार करते हैं।" (कुर्आन 16:68,69)

शिफ़ा से तात्पर्य है स्वास्थ्य का साधन। इससे सीधा तात्पर्य यह नहीं है कि कुर्आन की आयतों को पढ़ कर उनका इस्तेमाल झाड़—फूँक के लिए किया जाए, बल्कि उपरोक्त आयतों से हमें यह पता चलता है कि अल्लाह ने इन्सान को ऐसी चीज़ें प्रदान की हैं, जिनका इस्तेमाल अलग—अलग बीमारी को ठीक करने के लिए किया जाता है। मसलन शहद का इस्तेमाल दवाई के तौर पर भी किया जाता है।

इसी प्रकार हमें दूध, मांस, मछली आदि से प्रोटीन और विटामिन प्राप्त होते हैं। गंडे—तावीज़ के समर्थक कुर्आन की सिर्फ़ 2—4 आयतों से यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि तावीज़ गंडे और झाड़—फूंक जायज़ है, कुरआन की शेष आयतों पर ध्यान नहीं दिया जाता। इन्सान को सोच—विचार करने तथा निरीक्षण करने का आदेश देती हैं। परन्तु ये लोग इन आयतों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं।

कुर्आन में है— "तो क्या तुम किताब के एक हिस्से पर ईमान लाते हो और दूसरे हिस्से का इन्कार करते हो?" (कुर्आन 2:85)

अतः हमें पूरे कुर्आन का अध्ययन करना चाहिए। कुर्आन का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि इन्सान को, ज़िना से रोका गया है तथा यह एड्स से बचने का सबसे अच्छा तरीक़ा है। कुर्आन शराब को हराम ठहराता है पूरी दुनिया जानती है कि शराब पीने से कई भयंकर बीमारियां होने का ख़तरा रहता है तथा हर साल हज़ारों लोग शराब पीने के कारण मर जाते हैं। कुर्आन सूअर का गोश्त खाने को हराम ठहराता है, क्योंकि इससे अनेक बीमारियां होने का अंदेशा रहता है।

अतः कुर्आन में शिफ़ा ही शिफ़ा है, क्योंकि कुर्आन ने ऐसी व्यवस्था की है कि व्यक्ति बीमार ही न हो तथा

यदि बीमार हो जाए तो वह इलाज करवाये। अब हम चलते हैं विज्ञान की ओर। कुर्आन के अवतरित होने से पूर्व कुछ लोग चांद–सूरज और सितारों की पूजा करते थे, लेकिन कुर्आन ने बताया कि इनको तो अल्लाह ने बनाया है, अतः इन्हें न पूजो, इनको बनाने वाले को पूजो। कुर्आन की आयतों का निरीक्षण करके ही आज इन्सान चांद पर क़दम रख चुका है तथा लगभग हर रोज़ एक नये सितारे की खोज कर लेता है।

यहां देखने वाली बात यह है कि सूरज की धूप से विटामिन–डी प्राप्त होता है। कुर्आन में लिखा है कि हर जीवधारी को एक तरह के पानी से पैदा किया गया है। आज विज्ञान ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि यह सिद्ध हो गया है कि वाक़यी हर जीवधारी एक तरह के पानी से पैदा किया गया है।

कुर्आन में लिखा है कि अल्लाह ने सात आसमान बनाये। विज्ञान अभी इतनी तरक़्क़ी नहीं कर पाया है कि सात आसमानों से क्या मुराद है। लेकिन जिस तेज़ी से विज्ञान तरक़्क़ी कर रहा है, उससे जल्दी ही हम पर सात आसमानों की हक़ीक़त भी खुल लाएगी।

कुर्आन इन्सान को निरंतर सोच–विचार करने का आदेश देता है। यानी कुर्आन इन्सान को लगातार शोध करने को कहता है। शोध किसी भी विषय में किया जा सकता है। हम यहां सिर्फ़ चिकित्सा विज्ञान की बात करेंगे। चिकित्सा विज्ञान में शोध करने का यह परिणाम निकला कि आज लगभग हर बीमारी का इलाज मौजूद है। पहले के ज़माने में जिन बीमारियों से हज़ारों लोग मर जाते थे, आज उनके टीके और वैक्सीन मौजूद हैं।

आज हम देखते हैं कि अलग–अलग बीमारी का अलग–अलग डॉक्टर मौजूद है। जैसे– मनोचिकित्सक, हड्डी का डॉक्टर, दिल का डॉक्टर, नाक–कान व गले का डॉक्टर आदि। यह चिकित्सा विज्ञान में हो रहे शोधों का ही परिणाम है। अल्लाह ने कई तरह की वनस्पति पैदा की है, जिनमें से हमें कई का तो अभी तक ज्ञान ही नहीं है। इन वनस्पति का उपयोग भी दवा बनाने के लिए किया जाता है। भविष्य में संभव है कि ऐसी वनस्पति मिल जाए जिससे कि जो आजके असाध्य रोग हैं उनका भी इलाज करने में कामयाबी मिल जए।

अतः जो लोग इस कुर्आन में सोच–विचार नहीं करते हैं, उनके विषय में कुर्आन कहता है कि इनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं। ये लोग गूँगे, बहरे और अंधे हैं तथा जानवरों से भी बदतर हैं। अल्लाह ने इनके दिलों पर मुहर लगा दी है अतः ये न कुछ सोचते हैं, न समझते हैं।

कुर्आन जगह–जगह इन्सान को सोच–विचार और निरीक्षण करने का आदेश देता है तथा अपनी अक़्ल का इस्तेमाल करने को कहता है। जैसे– "क्या तुम बुद्धि से बिल्कुल ही काम नहीं लेते।" (कुर्आन 2:44)

"जो लोग अक़्ल से काम लेते हैं, उनके लिए आसमानों और ज़मीन की संरचना में, रात और दिन के निरंतर एक–दूसरे के बाद आने में, उन नौकाओं में जो इन्सान के लाभ की चीज़ें लिए हुए नदियों और समुद्रों में चलती –फिरती हैं, बारिश के उस पानी में जिसे अल्लाह ऊपर से बरसाता है फिर उसके द्वारा मुर्दा ज़मीन को जीवन प्रदान करता है और धरती में हर तरह के जीवधारियों को फैलाता है, हवाओं की गर्दिश में और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के बीच आज्ञा के वशीभूत बनाकर रखे गये हैं, अनगिनत निशानियां हैं।" (कुर्आन 2:164)

"ऐ आदम की संतान हमने तुम पर लिबास उतारा है कि तुम्हारे शरीर में गुप्त अंगों को ढांके और तुम्हारे लिए शरीर की रक्षा और सौंदर्य का साधन भी हो, और बेहतरीन लिबास परहेज़गारी का लिबास है। यह अल्लाह की निशानियों में से एक निशानी है, शायद कि लोग इससे शिक्षा ग्रहण करें।"

(कुर्आन 7:26)

"और वही है जिसने यह ज़मीन फैला रखी है, इसमें पहाड़ों के खूंटे गाड़ रखे हैं और नदियां बहा दी हैं। उसी ने हर तरह के फलों के जोड़े पैदा किये हैं वही दिन को रात से छिपाता है। इन सारी चीज़ों में बड़ी निशानियां हैं, उन लोगों के लिए जो सोच–विचार से काम लेते हैं।"

(कुर्आन 13:4)

"क्या इन लोगों ने आसमान और ज़मीन की व्यवस्था एवं प्रबंध पर कभी विचार नहीं किया और किसी चीज़ को भी जो अल्लाह ने पैदा की है, आंखें खोलकर नहीं देखा?"

(कुर्आन 7:185)

"ज़मीन में बहुत सी निशानियां हैं विश्वास करने वालों के लिए और खुद तुम्हारे अपने अस्तित्व में है। क्या तुमको सूझता नहीं?"

(कुर्आन 5:21–21)

"यक़ीनन अल्लाह की दृष्टि में अत्यन्त बुरे क़िस्म के जानवर वे बहरे–गूंगे लोग हैं, जो बुद्धि से काम नहीं लेते।" (कुर्आन 8:22)

"क्या ये लोग ज़मीन में चले–फिरे नहीं हैं कि इनके दिल समझने वाले या इनके कान सुनने वाले होते? वास्तविकता यह है कि आंखें अंधी नहीं होतीं मगर वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।" (कुर्आन 22:46)

अतः उपरोक्त आयतों से यह सिद्ध होता है कि कुर्आन इन्सान को सोच–विचार करने तथा बुद्धि से काम लेने का आदेश देता है।

अतः हमें चाहिए कि हम चिकित्सा विज्ञान पर निरंतर शोध करते रहें। कुर्आन में हर मर्ज़ की दवा है, शोध करके हम उन दवाओं को प्राप्त कर सकते हैं, इसी से इन्सान को शिफ़ा मिलेगी।

(कान्ति मासकि दिसम्बर 12 से ग्रहीत)

❖❖❖

स्वागत एवं अनुरोध

हम आपके परामर्शों का स्वागत करते हैं तथा लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सरल भाषा में लिखें।

इदारा

आतंकवाद की समस्या एवं समाधान

—इक़बाल अहमद

आतंकवाद आज एक विश्वव्यापी समस्या बन गयी है। इस विश्वव्यापी ख़तरे के प्रति सभी देश चिन्तित दिखाई देते हैं और आज कोई भी देश ऐसा नहीं जहां आतंकवाद न पनप रहा हो अमेरिका आतंकवाद का लख्य भी है और शरणस्थली थी। आतंकवाद का मुक़ाबला करने के लिए अमेरिका ने आधुनिक यंत्र एवं साधन विकसित किये हैं, फिर भी आतंकवाद से मुक्ति नहीं मिल पायी है।

आतंकवाद का प्रतिफल हमारे लिए संकट का वाहक और हमारे प्राणों का ग्राहक बना रहता है। न मालूम कब, कहां और किस पर उसकी गाज गिरे? आतंकवाद आज परमाणु बम से भी अधिक भयावह बन गया है। आतंकवाद के आतंक ने हमारे नैतिक पक्ष को इतना दुर्बल बना दिया है कि आज हम आतंकवादी घटनाओं एवं आतंकवादियों के बारे में सीधी एवं खरी बात कहते हुए डरते हैं, क्योंकि आतंकवाद का फंदा हर समय हमारे सामने झूलता रहता है।

आतंकवाद समाज का अभिशाप है, कलंक है। आतंकवादी गतिविधियों को देख कर यह प्रश्न उठता है कि क्या सभ्यता के उच्च स्तरीय विकास का दावा करने वाला मानव अपने पाश्विक स्तर से ऊपर उठा है या नहीं और क्यों सभ्यता के विकास के लिए किये गये समस्त प्रयत्न सार्थक हैं। आतंकवाद ने आज जन–जीवन को कठिन बना दिया है और सम्पूर्ण वातावरण को दूषित संकुल कर दिया है। आतंकवाद के संबंध में वृहद हिन्दी कोष में कहा गया है– "राज्य या विरोधी वर्ग को दबाने के लिए भयोत्पादक उपायों का अवलम्बन हैं" इसी तरह में Longman Modern English Dictionary में आतंकवाद को परिभाषित करते हुए लिखा गया "शासन करने या राजनीतिक विरोध प्रकट करने के लिए भय को एक विधि के रूप में उपयोग की नीति को प्रेरित करना ही आतंकवाद है।"

इन सब परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि राजनीतिक विरोध प्रकट करने अथवा अपनी मांगों को मनवाने के लिए हिंसा एवं भय का प्रयोग करना ही आतंकवाद है। यहां यह भी स्पष्ट करना उचित होगा कि इस्लाम धर्म में आतंकवाद की कोई जगह नहीं है। इस्लाम मानवता, प्यार एवं भाईचारे को बढ़ावा देता है। इस्लाम धर्म की आड़ लेकर आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले लोगों की हमारा समाज कड़ी निन्दा करता है। साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगा कि बेवजह इस्लाम को बदनाम करना भी उचित नहीं है। आतंकवाद पर चलने वाले चाहे जिस धर्म के मानने वाले हों, उनकी बड़ी निन्दा की जाती है। हमारा देश अमन–शान्ति का देश है, इसे इसी रूप में प्रस्तुत करना

तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को क़ायम रखना हम सभी भारतवासियों का नैतिक कर्तव्य है।

आतंकवाद की समस्या का समाधान नितान्त आवश्यक है। इसके अभाव में देश की एकता एवं अखंडता कायम नहीं रह सकती और न ही लूटपाट, हत्या, आगज़नी, बलात्कार, अपहरण एवं डकैती की घटनाएं रोकी जा सकती हैं। कश्मीर, असम, पंजाब और देश के अन्य भागों में आतंकवाद के कारणों में भिन्नता है, अतः उनके समाधान में भी सामान्य उपायों के अतिरिक्त कुछ उपाय ऐसे भी अपनाने होंगे जो उस क्षेत्र विशेष के लिए ही उपयोगी हों।

आतंकवाद को समाप्त करेन के लिए हम निम्नांकित उपायों का सहारा ले सकते हैं–

1. आतंकवाद को समाप्त करने के लिए पुलिस, गुप्तचर विभाग, सेना एवं बलों की सहायता से आतंकवादियों के ठिकानों का पता लगाया जाए तथा उन्हें नष्ट कर दिया जाए और जो व्यक्ति इन गतिविधियों में लिप्त पाये जाएं, उनके विरुद्ध कठोर क़ानूनी कार्यवाई की जाए, उन्हें कठोर दण्ड दिया जाए। किन्तु साथ ही यह ध्यान रहे कि निर्दोष लोगों पर कोई अत्याचार न हो।

2. आतंकवाद को समाप्त करने के लिए राजनीतिक प्रक्रिया में नये प्राण फूंकने होंगे, उसका कायाकल्प करना होगा जिससे कि वह पुलिस कार्यवाई के साथ–साथ चल सके। पुलिस कार्यवाई अकेले बलबूते पर आतंकवाद का मुक़ाबला नहीं कर सकती है। लोगों को मुख्य धारा में लाने की कोशिश की जानी चाहिए।

3. उग्रपंथियों के भारत विरोधी दुष्प्रचार को विफल करने के लिए नरमपंथियों का सहारा लिया जाए तथा उन्हें क्षेत्र में भेज कर लोगों को आतंकवाद का मुक़ाबला करने के लिए तैयार किया जाए।

4. आतंकवादियों से निपटने के लिए तथा आत्म रक्षा के लिए गांव वालों को सरकार द्वारा हथियारों का वितरण किया जाए तथा प्रत्येक गांव में एक ग्राम रक्षा समिति का गठन किया जाए, जो आतंकवादियों से गांव की रक्षा कर सके क्योंकि सरकार और पुलिस ही हर व्यक्ति को हर क्षण सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकती। आतंकवाद का साया इतना बढ़ गया है कि यह कोई भी नहीं जानता कि कब किसके साथ कैसी घटना घट जाएगी।

5. जिन लोगों को हिंसा, लूट–पाट, बलात्कार एवं आतंकवाद में लिप्त होने के आरोप में जेल बंद किया गया है, उन पर मुक़दमे शीघ्र प्रारंभ किये जाएं और जो लोग निर्दोष पाये जाएं, उन्हें जेल से मुक्त किया जाए।

6. पाकिस्तान से लगने वाली कश्मीर व पंजाब की सीमा को सील कर दिया जाए, सीमा पर कटीले तारों की बाड़ लगायी जाए और आने–जाने के लिए कुछ ही

रास्ते निश्चित किये जाएं और उन पर निगरानी बढ़ा दी जाए। सीमा से लगी एक किलोमीटर चौड़ी सुरक्षा पट्टी बना दी जाए। उस इलाक़े में जितने खेत पड़ें, उन्हें विशेष पहचान पत्र दिये जाएं।

7. देश के सभी राजनीतिक दलों के सहयोग से आतंकवाद की समस्या का समाधान किया जाए। इस हेतु एक सर्वदलीय समिति गठित की जाए। सभी दलों की सामान्य सहमति से आतंकवाद को समाप्त करने में मदद मिलेगी और भय तथा आतंक के स्थान पर सहयोग और सौहार्द का वातावरण तैयार होगा।

8. आतंकवाद का एक कारण नवयुवकों में बढ़ती बेरोज़गारी भी है। इस बेरोज़गारी को समाप्त करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर आधारित उद्योग खोले जाएं जिनमें बेरोज़गार नवयुवकों को रोज़गार दिया जाए। मुर्ग़ीपालन, डिब्बा बन्द खाने का सामान तैयार करने, कश्मीर में फलोद्यान एवं फलों को पैक कर अंयत्र भेजने तथा ट्रांसपोर्ट व्यवसाय को प्रोत्साहन दिया जाए।

9. मुठभेड़ के नाम पर हत्याओं का जो आरोप सुरक्षा बलों पर लगाया जाता है, उनकी न्यायिक जांच करायी जाए इसका लोगों पर मनोवैज्ञानिक असर यह पड़ेगा कि उनका सुरक्षा बलों के प्रति विश्वास बढ़ जाएगा।

10. कश्मीर में मुसलमान और हिन्दुओं को मिलाकर स्वंय सेवी नागरिक दस्ते बनाये जाएं जिनमें विभिन्न दलों के लोगों को भी शामिल किया जाए। ये दस्ते गांव–गांव घूमें तथा अमन–शान्ति बहाल करें। दुष्प्रचार का जवाब दे सकें जहां कहीं भी आतंकवादियों को उग्रवाद, हिंसा और देशद्रोह की भावनाएं भड़काते हुए पाया जाए तो उन्हें गिरफ़्तार कर उन पर मुक़दमा चलाया जाए और क़स्बों में ऐसा माहौल तैयार किया जाए कि जो हिन्दू, मुस्लिम व सिक्ख डर से राज्य को छोड़ कर चले गये हैं, वे पुनः अपने घरों को लौट सकें।

11. लेखकों, नाटकों, कविताओं गीत और ग़ज़लों के माध्यम से जिन्हें पत्र–पत्रिकाओं, रेडियो, टी0वी0 आदि के द्वारा जनता तक पहुंचाया जाए, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, पारस्परिक भाईचारा व हिन्दू–मुस्लिम एकजुटता को सुदृढ़ किया जाए, लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं को जगाया जाए तथा शत्रु देशों के मनसूबों से अवगत कराया जाए। लोगों को यह बताया जाए कि यदि देश रहेगा तो हम भी रहेंगे, यदि देश ही टुकड़े–टुकड़े हो गया तो हमारा अस्तित्व कहां रहेगा। अतः भाषा, धर्म, क्षेत्र, जातीय हितों से पहले राष्ट्र हित है। हम अपने देश में स्वच्छ एवं पवित्र तथा प्यार एवं भाईचारे का माहौल बनाने का प्रयास करें, इससे हमारा देश और अधिक विकसित एवं मज़बूत होगा।

(कान्ति मासकि दिसम्बर 12 से ग्रहीत)

❑❑

एक अमेरीकी पादरी का क़बूलू इस्लाम और फ़रीज़े हज की अदायगी

—जावेद नदवी

दीने इस्लाम को जिस कद्र गैरों की तरफ से निशाना बनाया जा रहा है, उस क़द्र हक़ के मुतलाशी उसकी तरफ़ खिंचे चले आ रहे हैं मग़रिब के प्रोपेगण्डे की हक़ीकत का पता लगाने के लिए जब वह इस्लाम की तालीमात का बग़ौर मताअला करते है तो उसकी सदाक़त व हक़्क़ानियत के असीर हुए बग़ैर नहीं रहते, लेकिन तअज्जुब व हैरानी में उस वक़्त इज़ाफ़ा हो जाता है जब यह देखने में आता है कि अवाम के अलावह पढ़े लिखे और मज़हबी लोग भी जब साफ़ दिल से इस्लाम का मुतालआ करते हैं तो इस बात का एत्राफ करने पर मज़बूर हो जाते हैं कि दीने इस्लाम के अन्दर दूसरे मज़ाहिब व अदयान के मुक़ाबले में जो चीज़ सब से ज़्यादा उनको अपनी तरफ़ खींचती है वह इनसानियत के तईं उम्दह अख़लाक़ व मुहासिन, हमदर्दी व ख़ैर ख़्वाही हैं, यह सिर्फ दीने इस्लाम का खास्सा हैं दीने इस्लाम ने हर एक के साथ हुसने सुलूक का हुक्म दिया है और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन तमाम चीज़ों को अपनी ज़िन्दगी में बरत कर दिखाया है।

अरबी जरीदा "अल–आल्मुल इस्लामी" की खबर के मुताबिक़ कोरया नज़ाद एक अमेरीकी पाद्री ने इस्लाम क़ुबूल किया और साले रवां हज की सआ़दत से सरफ़ाज़ भी हुआ, उसने इस्लाम की फ़य्याज़ी व रहमदिली उसकी रहमते इन्सानियत और अख़लाक़ व किरदार पर मुश्तमिल किताबों के मुताले के बाद शरह सद्र के साथ इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

उन्होंने इस्लाम लाने के बाद अपने लिए अब्दुल वह्हाब नाम पसन्द किया और कहा कि इस्लाम ही दीने बरहक़ है अब किसी आसमानी दीन और मज़ाहिब के अन्दर असलियत बाक़ी नही रह गई है सब तब्दील हो चुके हैं और इन्सानियत तो अब नाम की भी नहीं रही। इस्लाम और पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतअल्लिक़ किताबों के मुताले के बाद जब उसको इतमिनान हो गया तो उसने जुनूबी कोरिया के दारुल हुकूमत में वाक़े सऊदी सफ़ारत ख़ाने से इस सिलसिले में रुजुअ़ किया और दीने इस्लाम ज़ाहिर करने की दिलचस्पी ज़ाहिर की और वहीं उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया, इसी के साथ हज की अदायगी का इरादा भी उन्होंने ज़ाहिर किया। चुनांचे वह इस अ़ज़ीम सआ़दत से भी वह बहरह

शेष पृष्ठ..... 40 पर

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारूल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	21, अदनान पल्ली निकट हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

बंदी मुस्लिमों पर जल्द हो फैसला- पर्सनल लॉ बोर्ड

कार्यकारिणी बैठक लखनऊ 4/02/2013

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने आतंकवाद के नाम पर जेलों में बंद उन मुस्लिम युवकों के मामलों पर गम्भीर चिंता व्यक्त की है जिनमें बरसों गुजर जाने के बाद आज तक आरोप पत्र तक दाखिल नहीं किये गए। बोर्ड ने ऐसे युवाओं के मामलों को तत्काल संज्ञान में लेने की मांग उठाई है।

यहां नदवा कॉलेज परसिर में बोर्ड के अध्यक्ष मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी की अध्यक्षता में हुई कार्यकारिणी बैठक में बोर्ड ने कहा कि मालेगांव, मक्का मस्जिद, अजमेर शरीफ और समझौता एक्सप्रेस धमाकों सहित विभिन्न मामलों में देश के विभिन्न राज्यों की जेलों में बंद हैं। बोर्ड ने अपेक्षा की है कि इन मामलों में अदालत से निर्दोष मानकर रिहा किये गए, युवकों को गिरफ्तार करने वाली कानून व्यवस्था से जुड़ी सरकारी एजेंसियों के जिम्मेदारों के खिलाफ उन्हीं धाराओं में मुकदमे चलाए जाएं जिन धाराओं में इन युवकों को गिरफ्तार किया गया। ❑❑

—उर्दू पद्य हिन्दी लिपि में

अ़र्श से और फ़र्श से तुझ पर सलाम और सलात

—मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ रह0

ऐ कि तेरा जमाल है ज़ीनते महफिलेहयात
दोनों जहां की रौनकें हैं तेरे हुस्न की ज़कात
तेरी जबीं से आश्कार परतवे ज़ात का फ़रोग़
और तेरे कूचे का गुबार सुरम–ए–चश्मे काएनात
बारगाहे अलस्त से बख़्श दिये गये तुझे
सब मलकी तसर्रुफ़ात सब फ़लकी तजल्लियात
चेहरा कुशाकरम तेरा क़ाफ़ से ता क़ैरवां
लुत्फ़ तेरा करिश्मा संज कअ़बा से ताब सौमनात
देखते ही तेरा जलाल कुफ़्र की सफ़ उलट गई
झुक गई गरदने हुबल टूट गया तिलिस्मेलात
आँख के इक इशारे से तूने मअ़न बदल दिये
ज़ेहन के सब तसव्वुरात क़ल्ब के सब तअस्सुरात
चूँ व चेगूना व चरा, ता ब कुजा व ताबकै
हल किये इक बात में तूने यह सरमदी निकात
ग़ैर को ख़्वेश कर दिया नेश में नोश भर दिया
पल में दुरुस्त कर दिये बिगडे हुए तअल्लुक़ात
तेरी सना में तर ज़बां हो गया जो मेरी तरह
उसके क़लम में आगई शाने रवानिये फ़ुरात
पस्तो बुलन्द के लिए अ़ाम हैं तेरी रहमतें
अर्श से और फ़र्श से तुझ पर सलाम और सलात

❖❖❖

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

नबी, मुहम्मद को तू मान
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
नबी का कहना तू ले मान
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
पूज्य तू केवल रब को मान
सल्लल्लाहु अ़लन्नबी
नबी पे उतरा है कुर्आन
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
कुर्आ है रब का फरमान
सल्लल्लाहु अ़लन्नबी
नबी का जीवन है कुर्आन
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
नबी का हर इक कहना मान
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
तुझ से राज़ी हो रहमान
सल्लल्लाहु अ़लन्नबी

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

इस्लामी शिक्षा में बदलाव का प्रस्ताव खारिज-

इस्लामी शिक्षा पद्धति में संशोधन का प्रस्ताव उलमा ने खारिज कर दिया। उनका कहना है कि जिस शिक्षा को 150 वर्षों से अमल में लाया जा रहा है, उसमें बदलाव की जरूरत नहीं है, यह बात दीगर है कि शिक्षा देने का अंदाज जरूर बदला जा सकता है। फतवा पाठ्यक्रम को दो साल का करने पर सहमति बनी है। उलमा का कहना है कि तालिबे इल्म को एक साल अध्ययन कराया जाए तथा दूसरे साल व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए। उलमा ने कानून की शिक्षा को भी तालिबे इल्म के लिए जरूरी माना है।

ओबामा ने सहयोग माँगा-

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने चीनी समक्ष हू जिंताओ से ईरान के परमाणु कार्यक्रम पर कार्यवाई में सहयोग करने की अपील की है। अमेरिका तेहरान के इस कार्यक्रम के बाद देश पर कड़े प्रतिबंध लगाने के लिए दबाव डाल रहा है। ओबामा ने इस महीने के अंत में होने वाले परमाणु सुरक्षा सम्मेलन में चीन की भागीदारी का भी स्वागत किया। चीनी राष्ट्रपति से ईरान, जी–20 और परमाणु सुरक्षा सम्मेलन के मुद्दे पर बात की।

गर्भपात की गोलियाँ न खाएँ महिलाएं: पोप-

पोप बेनेडिक्ट 16 वें महिलाओं के गर्भपात कराने के खिलाफ हैं। उन्होंने इटली में गर्भपात की एक गोली बाजार में उतारे जाने एवं आयोजित एक समारोह में गोली की आलोचना की है।

पोप ने कहा कि ईसाइयों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे गैर कानूनी काम न करें, मसलन अजन्मे निर्दोष बच्चों की हत्या न करें। ❑❑

एक अमेरीकी पादरी .....

अन्दोज़ हुआ और यह सआ़दत सऊदी हुकूमराँ शाह अब्दुल्लाह बिन अब्दुल अ़ज़ीज़ की तरफ से उनको मिली, जुनूबी कोरिया में सऊदी सफ़ीर शैख़ अहमद अलबुर्राक़ ने अपने एक बयान में कहा कि इस कोरियाई अमरीकी पादरी ने अपने इस्लाम लाने का ऐलान सफ़ारत ख़ाने की तरफ़ से मुनअ़किद किये गए एक मजलिस में किया उन्होंने यह भी वज़ाहत की कि सले रवां जुनूबी कोरिया में 39 लोग दायरे इस्लाम में दाखिल हो चुके हैं।

इसी के साथ–साथ यह बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि खुद सऊदी अरब के दारुल हुकूमत रियाज़ में मुक़ीम 12 अफ़राद बएक वक़्त इस्लाम में दाखिल हो चुके हैं और यह सब फिलिप्पाईन से तअल्लुक रखने वाले हैं।

❖❖❖